



॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥

समाचार-पत्र

ई-पेपर

# प्रेम प्रकाश सन्देश

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मासिक समाचार पत्र

15 अप्रैल 2025

वर्ष 18 अंक 01

कुल पृष्ठ - 30 वार्षिक शुल्क : ₹ 200/- ( भारतवर्ष में ), ₹ 2000/- ( विदेश में ), एक प्रति ₹ 20/-

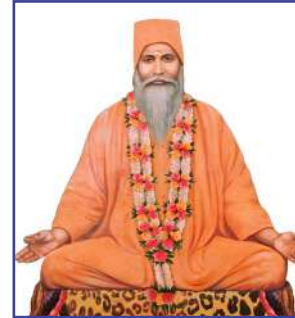
## सद्गुरु टेऊराम अमृतवाणी

पिछले अंक से आगे...

दोहा- हों अनाथ अतिशय दुखी, डरियो देख संसार ।  
डूबत हूँ भव सिंधु में, मोहि करो प्रभु पार ॥

हे भगवन्! इस संसार को देखकर मैं बड़ा भयभीत हो रहा हूँ और इस संसार सागर में डूबा जा रहा हूँ। मुझ अनाथ और असहाय का एकमात्र आप ही सहारा हो, आप अपनी निजी कृपा कर पार कर दो।

छन्द- सर्व ओर से होय निरासा, चरन आपके आन गहे ।  
लाख चुरासी जोनि चक्र में, फिर हम बहु दुख सहे ।  
कृपा कर गुरु अपना कीजे, तरफ तुम्हारे देख रहे ।  
कहे टेऊं गुरु पार करो अब, भव सिन्धु में मैं जात बहे ॥



सागर के तटवर्ती बड़े-बड़े बंदरगाहों पर खड़े बड़े-बड़े जलयानों पर स्वाभाविक ही कौए आ-आकर बैठा करते हैं। फिर दूर देश जाने के लिए बंदरगाहों को छोड़कर जब जलपोत दो-चार मील सागर में अन्दर जाते हैं, तब दैवयोग से जलयान में रह जाने वाला कौआ जलयान को छोड़कर बाहर जाने के लिए इधर-उधर उड़ान भरने लगता है परन्तु जहाज के चारों ओर दूर-दूर तक पानी ही पानी देख कर बैठने के लिए और कोई भी जगह न देखकर और जहाज को ही एकमात्र सहारा समझ कर फिर वापस जहाज पर ही आ कर बैठता है।

हे प्रभु! उस कौए की तरह इस अपार संसार सागर में डूबते-तैरते सुख चैन न पाकर चौरासी लाख योनियों में भारी कष्टों को सहकर, और चारों ओर से दुख-दर्द भरी आवाजों को सुनकर, सब ओर से निराश होकर, एकमात्र आपके चरण कमलों को सहारा समझ कर, मैं आपकी शरण में आया हूँ। अब आप मुझ दीन-हीन पर अपनी कृपा कर आत्म-ज्ञान रूपी जहाज में बिठा कर इस भयानक संसार सागर से पार अविनाशी देश में पहुंचा दो। अभी सत्संग समाप्त कर ही रहे थे तो भाई गोबिन्दराम जी उठ कर कहने लगा कि हे प्रभु! विवाह के शुभकार्य में कुछ खटपट हो गयी है सो आप “पल्लव” अर्थात् प्रार्थना करें ताकि कार्य सुखपूर्वक सम्पन्न हो। यह सुनकर गुरु महाराज जी गोबिन्दराम जी को कहने लगे कि आप चिन्ता ना करें, आपका कार्य निर्विघ्न समाप्त होगा। यह कहकर पल्लव पाकर सत्संग समाप्त किया।

इस तरह प्रतिदिन सत्संग का कार्यक्रम नियमानुसार चलने लगा। पास पड़ौस जैसे गढ़ी आदूशाह, चक, खाही आदि गांवों के लोग भी गुरु महाराज जी का यशोगान सुन कर सत्संग व दर्शन के लिए आया करते थे।

शेष पेज नं. 2 पर...

### पेज नं. 1 से आगे...

वहां पर मास्टर केशवदास और कुछ अन्य लोग भी शिष्य बने। अन्त में भाई गोबिन्दराम जी के भाईयों के शुभ-विवाह का कार्य रास हुआ। वहां पर आये हुए गढ़ी आदूशाह के मुखिया श्री अनन्दराम जी और चक नामक गांव के भाई जशनराम व भाई चोइथराम आदि गुरु महाराज जी को अपने-अपने गांव में पधारने के लिए प्रार्थना करने लगे। प्रार्थना सुनकर दूसरे दिन भाई गोबिन्दराम जी आदि से विदा होकर गुरु महाराज जी गढ़ी आदूशाह नामक गांव में पधारे। सायंकाल को सैर करने के लिए दरिया के तट पर गये और वहां टहलते-टहलते एक पीपल के वृक्ष की सुन्दर छाया में जा कर बैठ गये, वहां पर भाई गोबिन्दराम जी ने हाथ जोड़कर कहा कि हे भगवन् ! इस संसार के माया-मोह में रहकर पांच विकारों से किस तरह से छुटकारा प्राप्त होगा। उसके लिये अगर कोई सरल उपाय हो तो कृपा कर बतायें। यह सुनकर गुरु महाराज जी निम्नलिखित भजन बोल कर कहने लगे कि-

### ॥ भजनु रागु जोगु ॥

करि को देहि सुधारुप्यारा, पाणु विकारनि खांत बचाए ॥ टेक ॥  
 कामु जदुहिं थो जोरुलगाए, शरमु मरमु सभु शानु विजाए ।  
 हरदमु थीउ हुशियारुप्यारा, जत सत सांतूं प्रीती पाए ॥ 1 ॥  
 क्रोधु जदुहिं थो जोशु जगाए, जानि जिगिरु ऐंजिसिमु जलाए ।  
 दिलि खे दे तूं ठारुप्यारा, खिम्या शान्ती सबुरु पिराए ॥ 2 ॥  
 लोभु जदुहिं थो लाए लोरी, धन मेड़ण जी थो जीअ झोरी ।  
 सच जो करि वहिवारुप्यारा, हिरिदे में सन्तोषु वधाए ॥ 3 ॥  
 मोहु जदुहिं थो मन खे मुंझाए, धीरजु बलु ऐं बुद्धि गंवाए ।  
 मन मां कहु अधिकारुप्यारा, ब्रह्मज्ञान जी जोति जगाए ॥ 4 ॥  
 गरिबु जदुहिं मनि वासु करे थो, धरम करम खे नासु करे थो ।  
 पाइ हलामत हारुप्यारा, कहे टेऊं अभिमानु मिटाए ॥ 5 ॥

जब तक यह शरीर है तब तक विकार भी रहेंगे। अतः इन विकारों को संसार की ओर से मोड़ कर सत्य की ओर लगाते रहना चाहिये। काम विकार को ब्रह्मचर्य में, क्रोध को क्षमा-शान्ति में, लोभ को सन्तोष में मोह को भगवान के प्रेम में, और अहंकार को नम्रता में बदलते रहने का भरसक प्रयास करते रहना चाहिये। ऐसा करने से मनुष्य का संसार में रहते हुए भी सुधार हो सकता है। इन सब विकारों में मोह बड़ा ही बलवान विकार है।

दोहा- मोह महा दुख रूप है, तांको दियो निकार ।  
 प्रीति जगत की छोड़के, अपना करो उद्धार ॥

आशय बतलाते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि संसार के चमकीले पदार्थों की जो प्रीति है वही समस्त अनिष्टों का कारण है। सन्त-महात्मा तो हर घड़ी सुनाते, समझाते और सावधान करते रहते हैं। फिर भी अज्ञानी लोग मोह रूपी अन्धकार से निकलने के बदले और भी अन्धकार की ओर बढ़ते जाते हैं।

दोहा- रे मन सबका मोह त्यागो, मोह महा विकराला है ।  
 मोह कुटुम्ब से कीना जिसने, मोह तिसी को घाला है ॥  
 अर्जुन जैसे वीर बहादुर, फसे मोह के जाला है ।  
 कहे टेऊं जो मोह त्यागो, सो जन रहत सुखाला है ॥

मोह के विषय में स्पष्ट बतलाते हुए कहने लगे कि इस मोह रूपी घोर अन्धकार को नाश करने के लिये आत्म-ज्ञान रूपी दीपक की ही आवश्यकता होती है। यह आत्म-ज्ञान रूपी दीपक ब्रह्मनेष्टी और ब्रह्मश्रोत्रिय देहधारी सद्गुरु ही दे सकता है। आत्म-ज्ञान रूपी दीपक से ही आत्मसुख की उपलब्धि होती है। इतना सुना व समझा कर फिर लौट कर स्थान पर आये। रात वाले सत्संग को निम्नलिखित भजन द्वारा आरम्भ करते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि-

शेष अगले अंक में...

**॥ ॐ सत्नाम साक्षी ॥**  
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मुखपत्र

# प्रेम प्रकाश सन्देश

15 अप्रैल 2024

वर्ष 18

अंक 01

## मंगल आशीष

सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज  
सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज  
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज  
सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

### संस्थापक

**सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज**  
**संरक्षक-मार्गदर्शक-प्रेरणास्त्रोत**  
**सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज**

### सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिये	₹ 200	₹ 2000
दो वर्ष के लिये	₹ 400	₹ 4000

मनीआर्डर भेजने व पत्र व्यवहार के लिये पता :  
**व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश सन्देश**  
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,  
लखनऊ, ग्वालियर-474001 ( मध्यप्रदेश )  
**फोन 0751-4045144**  
सम्पर्क समय : प्रातः 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)  
**e-mail : premprakashsandesh@gmail.com**

### Bank Facility

आईडीबीआई बैंक में आप को सुविधा/मनी ट्रांसफर के माध्यम से भी निम्न खाते में शुल्क जमा कराके फोन 0751-4045144 पर अथवा ब्लाटस् एप नम्बर 8989701236 पर सूचना दे सकते हैं.

**A/c 92610010000468**  
Net Bankig : IFSC: IBKL0000545  
**Editor Prem Prakash Sandesh, Gwalior**

नई सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिये सदस्यता शुल्क आप मनीआर्डर/कोर बैंक माध्यम के अलावा सद्गुरु महाराज जी की यात्रा के समय बुक स्टॉल पर व देश भर के विभिन्न शहरों में हमारे प्रतिनिधियों के पास जमा कर सकते हैं. इसके अलावा परम पावन गुरु धाम श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर के श्री अमरापुर सत्साहित्य केन्द्र में प्रतिदिन एवं रविवार प्रातः 8 से 12 व प्रत्येक गुरुवार-शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक श्री कुमार चन्दनानी, श्री नारायणदास रामचंदानी, श्री निहालचंद तेजनानी व श्री अशोक कुमार पुरसानी के पास जमा किया जा सकता है.

**our website : premprakashpanth.com**

**कवित** ❀ ❀ ❀ **अक्षय तृतीया** ❀ ❀ ❀

अक्षय तृतीया पर्व महान, अक्षत रहे भक्ति अरु ज्ञान।  
आस्था कहीं न हो क्षत - विक्षत, प्रभु का साक्षी नाम ही है सत।  
सब धर्मों का मान समान, कण-कण में गूँजे हरि गान।  
शंखनाद संग होय अज्ञान, गीता पढ़े कोई पढ़े कुरान।  
चर्च हो या पावन गुरुद्वारा, अविरल हो स्तुति की धारा।  
मानव देह महा वरदान, कण कण परम शक्ति की खान।  
हम मानव प्रभु की प्रति छाया, हर तन में ब्रह्माण्ड समाया।  
ब्रह्म स्वरूप सभी को जानों, सेवा को सर्वोपरि मानों।  
दीन, हीन, अपंग या अंधा, सबको देना अपना कंधा।  
अपनों ने जिनको ठुकराया, देना उन्हें स्नेह की छाया।  
अक्षय हो सेवा का चाव, परहित का मन में नित भाव।  
अक्षय हो भोजन का पात्र, भूखा जाय न कोई सुपात्र।  
अक्षय बहे स्नेह की धारा, बाहों में भर लो जग सारा।  
चलों मनाएँ आखा तीज, पग-पग रोपें प्रेम के बीज।

### अनुक्रमिका

अनुक्रम	विषय	पृष्ठ
01.	सद्गुरु टेऊराम अमृतवाणी	1-2
02.	चालीसा दो शब्द	4-5
03.	जप-साधना-भक्ति से बना तीर्थ श्री अमरापुर स्थान	6
04.	प्रसाद समझकर बनाएं माताएं भोजन	7
05.	चैत्र मेला सिन्धी बारहवीं तारीख को ही क्यों?	8
06.	हरिद्वार में हुआ माता कृष्णा उद्यान का भव्य उद्घाटन समाचार-चित्र	9-13
07.	हरिद्वार में माता कृष्णा उद्यान को समर्पित कविता-श्री हरकेश वधवा	14
08.	प्रयागराज महाकुम्भ में पूज्य महाराजश्री के पावन श्रीमख से बरसा अमृतसर	15-16
09.	सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज	17
10.	अक्षय तृतीया, साईं टेऊराम चालीसा महोत्सव सूचना	18
11.	मैं न होता तो क्या होता, भोजन झूठा नहीं बचाना चाहिए-प्रेरक प्रसंग	19
12.	ब्रह्मज्ञान का अधिकारी, सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज जन्मोत्सव सूचना	20
13.	सच्चा भक्त - प्रेरक प्रसंग	21
14.	आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज द्वारा रचित भोजन विधि दोहे	22
15.	साधक और भजन मार्ग के पथिक के लिये बहुत काम की बात	23
16.	जब अकबर ने बीरबल से पूछा-तुम्हारा परमात्मा इतने अवतार क्यों लेता है ?	24-25
17.	सत्संग का महत्व	25
18.	हिंदू नववर्ष नव संवत्सर 2082 के पंचांगों में स्वामी टेऊराम जयंती प्रकाशित	26
19.	समाचार डायरी	27
20.	स्वामी टेऊराम चिकित्सालय में हुआ दंत इकाई का शुभारंभ, अमरापुर गमन	28
21.	पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज एवं संत मण्डली का यात्रा कार्यक्रम	29
22.	व्रत - पर्व - उत्सव + सूचना, दुनिया एक सराय है (पावन प्रसंग)	29
23.	ब्रह्मदर्शनी (सिंधीअ में समुझाणी)	30

प्रेम प्रकाश सन्देश इंटरनेट पर पढ़ने के लिये क्लिक करें- [www.issuu.com/premprakashsandesh](http://www.issuu.com/premprakashsandesh)



# दो शब्द चालीसा

भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म में चालीसा का अत्यंत गौरवपूर्ण स्थान है, हिन्दू धर्म में चालीसा की उपासना एवं मान्यता सर्वोपरि है। चालीसा आराध्य की कृपा पाने का श्रेष्ठ साधन है। चालीसा को पढ़ते रहने से व्यक्ति के मन में साहस, आत्म विश्वास और पराक्रम का संचार होता है। भक्त (साधक) द्वारा भगवान् इष्टदेव या आराध्य को प्रसन्न करने के लिये और अपनी समस्याओं के निवारण (दूर)

करने के लिये सरल भाषा में की गई प्रार्थना को "चालीसा" कहा जाता है, जिसमें आप अपने आराध्य देव जी की स्तुति करते हैं। इसमें चालीस पंक्तियां रहती है (यह पद्यात्मक 40 छन्द की होने के कारण "चालीसा" कहलाती है) इसमें आराध्य देव द्वारा किये गये कार्यों के बारे में दर्शाया गया होता है। उनका हम यशोगान करते हैं, जिससे वह प्रसन्न हो जाते हैं। सुनने और पढ़ने में आनंद आता है। अत्यंत सरल भाषा में लिखा होने से इसे आसानी से पढ़ा जा सकता है। मंत्रों के जाप में कठिनाई हो सकती है परन्तु चालीसा के पठन में कोई कठिनाई नहीं होती, चालीसा में प्रत्येक पंक्ति का अलग-अलग महत्व होता है।

महापुरुषों के मतानुसार श्री तुलसी दास जी द्वारा रचित हनुमान चालीसा के पश्चात् बहुत से विद्वान महानुभावों द्वारा अपने-अपने आराध्य के सम्बन्ध में चालीसा की रचना की गई है।

**पाठ करने की विधि:**

- सर्वप्रथम-जिस स्थान पर पाठ कर रहे हैं वह स्थान पवित्र होना चाहिए, साथ ही स्वयं (साधक) को भी स्वच्छ अवस्था में स्थिर मन से, एकाग्रता के साथ चालीसा का पाठ करना चाहिये।

- बैठने के लिये ऊनी या कुशा के आसन का उपयोग करना चाहिए।
- यदि आप अपने निवास स्थल पर रहकर जिन आराध्य देव के चालीसा का पाठ कर रहे हैं, उन आराध्य देव का ध्यान कर या आराध्य देव के चित्र या मूर्ति के सम्मुख-दीपक जलाकर साथ में एक जल से भरा लोटा समीप में रखकर पाठ करें। कम से कम एक बार से लेकर तीन बार तक चालीसा का पाठ कर

सकते हैं। पाठ पूर्ण होने के उपरान्त जल को प्रसाद की तरह ग्रहण करें, साथ ही थोड़ा-थोड़ा जल अपने निवास स्थल में छिड़क दें, इससे आप सकारात्मक प्रभाव महसूस करेंगे साथ ही आपके घर से सभी नकारात्मक ऊर्जा दूर हो जावेगी।

- प्रयास करें कि चालीसा का पाठ प्रतिदिन एक ही समय पर करें, तो बहुत अच्छा होगा।
- विशेष परिस्थितियों में यात्रा के समय या सोते समय भी चालीसा का पाठ कर सकते हैं।

जैसा कि आप सभी सुविज्ञ पाठकों को विदित ही है कि मूर्तिमान ब्रह्मस्वरूप आचार्य पूज्य सद्गुरु स्वामी श्री टेऊराम जी महाराज के इस धराधाम पर अवतरित होने के मंगल पावन दिवस के 40 चालीस दिवस पूर्व अर्थात् दिनांक 21 मई से 30 जून 2025 तक चालीसा महोत्सव पूर्ण श्रद्धा-उमंग-व उत्साह के साथ सम्पूर्ण विश्व में निवासरत माननीय / सम्माननीय प्रेम प्रकाशी जनों द्वारा देश विदेश में स्थित सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर पूर्ण



**सद्गुरु टेऊराम अमृतोपदेश**

संसार में दो प्रकार के मनुष्य होते हैं- सज्जन और दुर्जन। दोनों के स्वभाव न्यारे न्यारे होते हैं। सज्जन पुरुष सबसे गुण ग्रहण करते हैं, जबकि दुर्जन मनुष्य भले मनुष्यों से भी अवगुण ही उठाते हैं।

# सद्गुरु टेऊराम चालीसा

मनोयोग एवं श्रद्धाभाव के साथ मनाया जा रहा है।

**चालीसा का पाठ करने के लाभ:-**

हर एक साधक के पृथक्-पृथक् अर्थात् अलग-अलग अनुभव होते हैं, किसी को कुछ लाभ होता है तो किसी को कुछ लाभ होता है। ऐसे लाभ जो हर किसी को मिलते हैं :-

- मानसिक शांति मिलती है।
- धन धान्य एवं सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है साथ ही स्वास्थ्य अच्छा रहता है।
- जाने अनजाने में हमारे द्वारा किये गए पाप नष्ट हो जाते हैं।
- लिये जाने वाले निर्णय सही होने लगते हैं।
- निरन्तर पठन से व्यक्तित्व में बदलाव आने लगता है।

- आत्म विश्वास में वृद्धि होती है साथ ही इच्छा शक्ति मजबूत होती जाती है।

- इसके पठन से हमारा आध्यात्मिक बल बढ़ता है, आध्यात्मिक बल से ही हम जीवन की हर परेशानी से छूट सकते हैं।

इस चालीस दिवसीय अनुष्ठान का सुफल (परिणाम) इस बात के ऊपर निर्भर है कि हम अपने लक्ष्य के प्रति कितने समर्पित हैं। अपने आराध्य सर्वसमर्थ

मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी श्री टेऊराम जी महाराज के अमृतमयी वचनों एवं पावन श्री चरणों में कितनी श्रद्धा एवं अटूट विश्वास है।

अपनी माता के वचनों पर अटल विश्वास कर मात्र 5 वर्ष के बालक “ध्रुव” को भगवान के दर्शन हुए, वह भगवान की गोद में बैठा। ठीक इसी तरह 5 वर्ष का छोटा

सा बालक (भक्तराज प्रहलाद) जिसे भगवान पर इतना विश्वास था कि वह भगवान के लिए कुछ भी कर सकता है उसके लिए भगवान स्वयं खम्भा फाड़कर प्रकट हो गये थे।

“सद्गुरु करुणा रूप हैं, सद्गुरु शक्ति भण्डार।

कह टेऊं विश्वास जिस, तांका बेढा पार ॥”

“मन सद्गुरु के द्वारे चलिए, सद्गुरु गरीब नवाज़ हैं,  
जो श्रद्धा से उसकी ओट ले,  
तिस जन की वो राखत लाज है ॥”

( श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ )

इस चालीस दिवसीय अनुष्ठान में कृपया सभी माननीय, सम्माननीय प्रेम प्रकाशी जन यह सुनिश्चित करें:-

- भूलकर भी तामसिक भोजन या मदिरा का सेवन नहीं करें।
- क्रोध पर नियंत्रण करने एवं मिथ्या व कटूवचन न बोलने का ईमानदारी से प्रयत्न करें।
- किसी भी प्राणी मात्र (जलचर, नभचर एवं थलचर) को पीड़ा नहीं पहुंचाएं।
- परिवार में माता - पिता व वृद्धजनों का अपमान व अवहेलना न करें अपितु उनकी सेवा करने का व्रत लें।
- समस्त प्राणी मात्र के प्रति
- “सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया।” की मंगलकामना करें।

हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि चालीसवें दिन हमारे ऊपर परम

आराध्य मंगलमूर्ति आचार्य प्रवर पूज्य सद्गुरु स्वामी श्री टेऊराम जी महाराज की अहेतुकि कृपा अवश्य बरसेगी साथ ही हमारे जीवन में निर्भयता, निश्चितता और निशोकता अवश्य आवेगी।

- संपादक, प्रेम प्रकाश संदेश

**सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश**

ज्ञान, ध्यान, आत्म विचार, नियम, प्रेम, शील, संतोष,  
उत्तम बुद्धि इत्यादि कुछ भी गुरु की कृपा के बिना नहीं मिल सकता।

**सद्गुरु टेऊराम चालीसा**



## तप-साधना-भक्ति के प्रभाव से बना तीर्थ श्री अमरापुर स्थान

### सद्गुरु श्री साईं टेऊं राम गुणगाथा

॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥

**उड़ती रेत को दिया आपने थाम.....**

जिस बालू रेत से शहर वालों को बड़ा खतरा रहता था! आये दिन आंधी तूफान से पूरा शहर मिट्टी-मिट्टी हो जाता था! जगह-जगह रेत के टीले बन जाते थे... सभी को बड़ा नुक्सान होता था! बड़े से बड़े सरकारी कर्मचारी अधिकारी भी इसका निराकरण नहीं कर पा रहे थे! सभी ने बहुत प्रयास किये... परन्तु सब व्यर्थ... किन्तु तप, तपस्या, साधना, भक्ति के बल पर महायोगी युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज ने संत-महात्माओं के साथ मिलकर उस बालू रेत को इस प्रकार बंद कर दिया कि उसका एक तोला भर भी उड़कर शहर में नहीं आ सकता था... शहर वालों पर बहुत बड़ा उपकार हो गया! वैसे भी साधु, संत, महात्मा तो परउपकारी होते ही हैं-जगत् कल्याण के लिए ही अवतरित होते हैं ! साधु, संतों ने तो बहुत बड़ा परिश्रम कर जंगल में मंगल कर दिया... जो कार्य असम्भव था... वह भजन, साधना के प्रभाव से युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज ने सम्भव कर दिया !

इस आश्चर्यजनक शक्ति को देखकर श्री गुरु महाराज जी के समक्ष जिलाधीश सहित बड़े-बड़े अधिकारी, मजिस्ट्रेट, पटवारी, सरपंच व पूरे शहर की जनता नत-मस्तक हो गये ! सभी महाराज श्री के उपकार का यशोगान करने लगे !

ऐसा अद्भुत करिश्मा तो ईश्वरीय शक्ति ही कर सकती है... समतल जमीन से लगभग ३०- ३५



फुट ऊपर श्री गुरुदेव जी की तप, साधना स्थली, वही रेत का टीला- 'श्री अमरापुर दरबार (डिब)' के नाम से सुविख्यात हुआ... आज भी वह पवित्र तीर्थ स्थल टण्डाआदम (सिन्ध) में बना हुआ है ! हजारों भक्त प्रतिदिन दर्शन करते हैं ! सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज 'डिब वाले साईं' के नाम से प्रसिद्ध हुए... तभी किसी कवि ने एक पंक्ति में लिखा-

**'उड़ती रेत को दिया आपने थाम-  
कि लीला तेरी तू ही जाने'...**

ऐसे युगपुरुष तपस्वी महापुरुषों को शत- शत नमन... धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज!

प्रेमप्रकाशी संत श्री मोहनलाल जी (मोनूराम जी)  
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

**सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी**

मुझे कुछ चाहिए ही नहीं, केवल इतनी बात से मुक्ति हो जायेगी ।

## प्रसाद समझकर बनाए माताएं भोजन

सद्गुरु सर्वानंद जी महाराज  
के जीवन-चरित्र से

॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥

भोजन बनाने की भी विधि होती है, क्योंकि 'जैसा अन्न वैसा मन' यह कहावत मिथ्या (झूठी) नहीं है। जो भोजन शुद्ध, शान्त, पवित्र, प्रसन्न मन और अपने हाथों से बनाया जाता है, वह भले ही रूखा-सूखा क्यों न हो पर अमृत का काम करता है। जो भोजन अशुद्ध, अपवित्र, अशान्त, अप्रसन्न मन से बनाया जाता है, वह भले ही चिकना-चुपड़ा, रसदार और स्वादिष्ट क्यों न हो पर जहर का काम करता है। यद्यपि भगवान श्री राम जी के पास दास-दासियों की कोई कमी नहीं थी, फिर भी माता सीता स्वयं अपने हाथों से भोजन बनाती थी। माता यशोदा के पास गोपियों की कोई कमी नहीं थी, फिर भी माता यशोदा स्वयं अपने हाथों से भोजन बनाती थी। नंद बाबा और कान्हा को अपने हाथ का बनाया हुआ भोजन खिलाती थी !

माता ईश्वरी बाई भी भोजन बनाने से पहले मुंह, हाथ-पैर धो-साफ कर फिर चौके (रसोई घर) में जाती थी, क्योंकि झूठे मुंह भोजन बनाना पाप है। भोजन बनाते समय रसोई घर में खाना पीना नहीं चाहिये, क्योंकि भण्डारा झूठा-अपवित्र हो जाता है। ये अन्नपूर्णा माता का अपमान है ! अन्न से जीवन और स्वास्थ्य शक्ति निकल जाती है। भोजन बनाने से पहले और बाद में कच्चा अन्न और पक्का भोजन थोड़ा



बहुत अग्नि में जरूर डालना चाहिये, ऐसा करने से अग्नि देव प्रसन्न होता है। क्रोध में भोजन कभी नहीं बनाना चाहिए ! सात्विक एवं प्रसन्न मन से भोजन तैयार कर फिर सभी घर वालों को खिलाना चाहिये। सबके बाद भोजन बनाने वाले को खाना चाहिये ! जैसे पाण्डव पत्नी द्रौपदी सबको खिला-पिलाकर फिर स्वयं भोजन करती थी। ऐसा

करने से भण्डारा भरा हुआ एवं भरपूर रहता है। कहीं बाद में मेरे लिये भोजन न बचे, यह सोचकर दूसरों को खिलाये बिना अपने लिये भोजन निकालकर रखना या पहले खा लेना पाप है। अपने लिए पहले से निकाल कर रखना भी नहीं चाहिए !

माता ईश्वरी देवी सबको खिला-पिलाकर, पशु-पक्षियों को देकर फिर स्वयं भोजन करती थीं।

रसोई घर में कुछ भी खाना, पीना नहीं चाहिए! पवित्रता से भोजन बनाना चाहिए !!

इस लेख को माताएं बार बार पढ़ें और अपनी बेटियों को जरूर पढ़वाएं !!! आज कल ये शिक्षाएं देना बहुत जरूरी है !!!

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

**विचार बिंदु** - जूठन मुंह से भगवान का भोग प्रसाद ( भोजन आदि ) नहीं बनाना चाहिए ! शुद्ध एवं पवित्रता से भोजन बनाएं ! अन्न भगवान है ! भोग लगाते समय तुलसी पत्र अवश्य ही डाले !

**सद्गुरु हरिदासराम  
वचनावली**

परम शांति के बिना जीवन का वास्तविक सुख संभव नहीं  
और वह शाश्वत् सत्य और नित्य प्राप्त तत्व से ही संभव है।

## चैत्र मेला सिंधी बारहवीं तारीख को ही क्यों...?

**प्रेम प्रकाश मण्डल का, चैत्र मेला अभिराम ।  
संत जनों का दरस कर, पाओ आत्मराम ॥**

अखण्ड भारत देश ! अनोखा संत समागम ! कुम्भ सदृश्य विशाल चैत्र मेला ! भक्ति-भाव से ओत-प्रोत ! भजन-भोजन का भण्डारा...सत्संग गंगा में स्नान करने का सुअवसर.... जीव का परमात्मा से मिलन...अध्यात्म ज्ञान चर्चा.... नाम-दान-स्नान का त्रिवेणी संगम....

‘युगपुरुष आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज’ द्वारा स्थापित विश्व विख्यात चैत्र मेला ! प्रेम प्रकाशियों का महाकुम्भ मेला ! लघु काशी जयपुर गुलाबी नगर की प्रमुख शान ! ऐसा है प्रेम प्रकाश मण्डल का चैत्र मेला.....

एक समय टण्डा आदम में स्थित श्री अमरापुर दरबार (डिब्र) पर कुछ संत-महात्मा एवं भक्तजन एकत्रित हुए। उन्होंने स्वामी जी को दण्डवत् प्रणाम किया और हाथ जोड़कर विनती करने लगे कि हे भगवन्! आप तो सैलानी संत-महापुरुष हैं-कभी कहाँ तो कभी कहाँ- जीवों के उद्धार हेतु यत्र-तत्र भ्रमण (विचरण) करते हैं। नाम दान का उपदेश देते हैं। जन-जन के हृदय में ज्ञान का दीप प्रज्वलित कर रहे हैं। अंधकार में डूबे हुए जीवों को सत्मार्ग की राह दिखला रहे हैं। चल तीर्थ के समान सत्संग गंगा में स्नान करवा रहे हैं। अज्ञानता की नींद में सोये हुए लोगों को जगा रहे हैं। किन्तु श्री अमरापुर दरबार (डिब्र) पर अनेक संत-महात्मा एवं श्रद्धालुगण दूर-दूर से आपके दर्शनों के लिये यहाँ आते ही रहते हैं। आप तो सदैव सैलानी हैं अर्थात् भ्रमण करते रहते हैं और इस स्थान डिब्र पर आपका रहना बहुत कम समय के लिये ही होता है। इस कारण प्रेमी भक्तजन आपके दर्शनों से वंचित होकर निराश लौट जाते हैं। अतः आपश्री के “पूज्य श्रीचरणों” में प्रार्थना है कि ऐसे कुछ दिन निश्चित कर दीजिए, जिससे संत, भक्त, प्रेमी आपका दर्शन व सत्संग श्रवण कर अपना जीवन सफल बना सकें।

**मिलो मिलाओ मिल रहो, मिलो तो मेला होय ।  
अन्तर आत्म जो मिले, मेला कहिये सोय ॥**

इस पर सद्गुरु महाराज जी ने सभी संत-महात्मा, सत्संगी प्रेमियों को एक बैठक में प्रस्ताव देते हुए कहा कि-

‘इस डिब्र ( बालू रेत का टीला ) पर चैत्र मास की सिन्धी बारहवीं तारीख को रेत का चबूतरा और झोंपड़ियाँ बनाकर सत्संग का शुभारम्भ किया जाये । अतः चैत्र मास की सिन्धी बारह तारीख से लेकर चार दिन तक संत-महात्मा, भजन मण्डलियाँ, प्रेमी भक्तजन आदि सभी के लिये अखण्ड भजन-भोजन का समागम रखना चाहिए.....’

स्वामी जी का यह सुझाव सभी संत-महात्माओं, भक्तजनों ने प्रसन्नचित्त होकर स्वीकार किया। चैत्र मास में बसन्त ऋतु होती है। रातें ठण्डी और सुहावनी होती हैं। गर्मी भी अधिक नहीं पड़ती। हिन्दू संस्कृति का नव वर्ष भी चैत्र मास से प्रारम्भ होता है। फसल कटाई होकर इस समय किसान भी फुर्सत में होता है (उस समय सिन्ध में अधिकांश लोग खेती-बाड़ी का कार्य ही करते थे) इसी मास में चेटीचण्ड, श्रीरामनवमी, नवरात्रा, श्रीहनुमान जयंती आदि पवित्र पर्व-उत्सव मनाये जाते हैं। अतः इस मास में ‘मेला’ लगाना अति उत्तम होगा और इस मेले को ‘चैत्र मेला’ के नाम से जाना जायेगा।

इस पवित्र आध्यात्मिक चैत्र मेले में दूर-दूर के प्रेमी भक्तजन, संतों के श्रीमुख से सत्संग गंगा में स्नान कर लाभ उठा पायेंगे! इस प्रकार ‘चैत्र मास की बारहवीं तारीख’ को चैत्र मेला प्रतिवर्ष मनाये जाने का निश्चय हुआ!

आज भी सिद्ध तपस्वी युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज द्वारा स्थापित कुम्भ सदृश विशाल ‘चैत्र मेला’ लघु काशी कही जाने वाली गुलाबी नगरी जयपुर के पावन तीर्थ स्थल श्री अमरापुर स्थान (डिब्र) पर प्रतिवर्ष बड़ी भव्यता एवं श्रद्धा, भक्ति-भाव के साथ मनाया जाता है। जिसमें लाखों प्रेमी, भक्तगण सत्संग सेवा का लाभ लेते हैं।

पाँच दिनों तक चलने वाले कुम्भ सदृश चैत्र मेले में युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का अखण्ड भजन व भोजन (भण्डारा) ‘लेने वाले बाबा टेऊराम-देने वाले बाबा टेऊराम’ उक्ति को चरितार्थ करता हुआ चलता रहता है। इस अवसर पर असंख्य श्रद्धालुगण ज्ञानसरिता में डुबकी लगाकर अपने जीवन को धन्य-धन्य बनाते हैं।

प्रेम प्रकाशी संत श्री मोहनलाल ( मोनूराम जी )  
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

**सद्गुरु टेऊराम अमृतोपदेश**

जो तत्त्ववेत्ता महात्मा हैं, वे ब्रह्म के स्वरूप हैं। उनकी वाणी चाहे किसी भी भाषा में हो वह वेद के समान है और जिज्ञासुओं के भ्रम संशयो को दूर कर उनका उद्धार करती है।



## हरिद्वार में हुआ माता कृष्णा उद्यान का भव्य उद्घाटन

प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं पूज्य सन्त मण्डल की उपस्थिति में

लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला एवं उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने किया भव्य शुभारम्भ

हरिद्वार। माँ गंगा की पावन नगरी हरिद्वार में श्री प्रेम प्रकाश मंडलाचार्य आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज की छत्रछाया में करुणा वात्सल्य प्रेम की मूर्ति पूज्या माता कृष्णा देवी की पावन स्मृति में नवनिर्मित 'माता कृष्णा उद्यान' का भव्य उद्घाटन हजारों हज़ूर प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की पावन अध्यक्षता में माननीय लोकसभा स्पीकर ओम बिरला जी, उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी जी, हरिद्वार सांसद त्रिवेन्द्र सिंह रावत, महापौर श्रीमती किरण जैसल, विधायक मदन कौशिक आदि अनेक गणमान्य नागरिकों की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, भूपतवाला, हरिद्वार के सामने सुंदर नवनिर्मित माता कृष्णा उद्यान में भिन्न भिन्न प्रकार के सुगंधित पुष्पों के पौधों के साथ साथ अनेक प्रकार के छायादार, फलदार वृक्षों का रोपण, म्यूजिकल फव्वारे, उत्तराखंड का राज्य पक्षी मोनाल का स्टेच्यू वॉकिंग ट्रैक, का सुंदर कार्य किया गया है, जिससे उद्यान की सुंदरता में चार चांद लग गए हैं।

इस शुभ अवसर पर मुख्य अतिथियों द्वारा स्वामी सर्वानन्द घाट पर गंगा मैया की पूजा-अर्चना कर माँ गंगा का आशीर्वाद प्राप्त किया गया एवं श्री मन्दिर में भगवान एवं गुरुजनों के श्री विग्रहों के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

इस अवसर पर लोकसभा स्पीकर माननीय ओम बिरला जी ने बताया कि श्री प्रेम प्रकाश मंडल ट्रस्ट सेवा के कार्यों में सदा अग्रणीय है। पूर्व में भी मण्डल द्वारा हरिद्वार में भागीरथ दीप स्तंभ, प्रेम प्रकाश घाट, सतनाम साक्षी घाट के साथ साथ अनेक सुंदर घाटों स्वामी सर्वानंद घाट, श्री अमरापुर घाट, स्वामी टेऊराम चौक भीमगोडा, गुरुमुख ध्यान कुंज, स्वामी सर्वानंद स्मृति स्थल आदि का निर्माण कराया गया है, जो कि पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बने हुए है ! जनसाधारण को समर्पित अति सुन्दर 'माता

### जनसाधारण को समर्पित



कृष्णा उद्यान' भी आने वाले समय में वृहद रूप में आकर्षण का केंद्र होगा और इस प्रयास से हरिद्वार में भक्त श्रद्धालुओं पर्यटकों की संख्या में इजाफा होगा। माननीय ओम बिरला जी एवं मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी जी द्वारा गुरु महाराज जी को को पखर पहनाकर आशीर्वाद लिया गया। पूज्य महाराजश्री द्वारा भी आगंतुक सभी महानुभावों को पखर प्रसाद दे कर सेवा क्षेत्र में सदैव इसी प्रकार कार्य करने का आशीर्वाद दिया गया।

माता कृष्णा उद्यान समारोह में स्वामी ब्रह्मानंद जी महाराज, स्वामी मनोहर लाल जी महाराज, स्वामी हरिओमलाल जी महाराज, संत रमेशलाल जी, संत मोनूराम जी, संत नंदलाल जी, संत श्याम लाल जी, संत शंभूलाल जी, संत लक्ष्मणदास जी, संत सुन्दरदास जी, संत हिमांशु जी, संत महेश, संत लक्ष्मीराम जी, संत प्रतापराय जी, संत ढालूराम जी, संत कमल गांधीधाम, संत कमल जयपुर, भगत हरीदास जी एवं अन्य संत महात्मा एवं जयपुर सहित देश-विदेश से आये सैकड़ों सेवाधारी एवं प्रेमीगण शामिल हुए।

**सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश**

जब आप अज्ञान की नींद से जागेंगे तो  
यह सारा जगत स्वप्न की तरह हो जायेगा।



# माता कृष्णा उद्यान

10



प्रेम प्रकाश संदेश



15 अप्रैल 2025



सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

भूखों को अपनी पसंद का खाना खिलाएँ,  
नगो को अपनी पसंद के वस्त्र दें। दान में बेकार वस्तुएँ मत दें।



# माता कृष्णा उद्यान

15 अप्रैल 2025

प्रेम प्रकाश संदेश

11



**सद्गुरु हरिदासराम  
वचनावली**

सात्विक, राजस और तामस तीन प्रकार की इच्छाएँ मन में उत्पन्न होती हैं। इन तीनों का त्याग करना है। इनमें से कोई भी इच्छा मन में रह गई तब तक शान्ति प्राप्त होने वाली नहीं।



# माता कृष्णा उद्यान

12

प्रेम प्रकाश संदेश

15 अप्रैल 2025



**सद्गुरु टेऊराम अमृतोपदेश**

आत्म ज्ञान के सिवाय कर्म और उपासना से भ्रम और भय दूर नहीं होंगे, उनके दूर हुए बिना मुक्ति नहीं होगी।



# माता कृष्णा उद्यान

15 अप्रैल 2025



प्रेम प्रकाश संदेश



13



सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

काल की गति बहुत धीमी है, पर उसका शब्द इतना बड़ा भारी है, जो बहुत दूर-दूर तक सुनने में आता है। इतना होने पर भी सब लोग उसको सुन नहीं सकते हैं।



## हरि द्वार में नवनिर्मित माता कृष्णा उद्यान को समर्पित....

माता कृष्णा तेरे नाम का, बना एक उद्यान, नवूब है चर्चा इसका, हुआ उद्घाटन जिसका, जिनकी कोख से, जन्मे हैं मेरे बाबा टेऊँनाम, नवूब है चर्चा इसका-नवूब है चर्चा जिसका, छविद्वार की, पावन भूमि जैसा पावन नाम, नवूब है चर्चा इसका, हुआ उद्घाटन जिसका।

1. लोकअभा के स्पीकर, माननीय बिजलाजी आए हैं, प्रदेश के मुख्यमंत्री, खुशियों का तोलफा लाए हैं, अपने हाथों से इन्हींने, मूर्त के दीप जलाए हैं, माता कृष्णा नाम करण से, माँ को दिया अन्मान, नवूब है चर्चा इसका, हुआ उद्घाटन जिसका, नवूब है चर्चा इसका, हुआ उद्घाटन जिसका, माता कृष्णा तेरे नाम का, बना एक उद्यान, नवूब है चर्चा इसका, आज उद्घाटन जिसका।
2. पन्थ से प्रेम प्रकाशी, बाबा से ठमने पाया है, बाबा मेरे अर्धव्यापी, अलगुन नें अमझाया है, छविद्वार की शान में लग गया, आज और इक चाँद, नवूब है चर्चा इसका, हुआ उद्घाटन जिसका, नवूब है चर्चा इसका, हुआ उद्घाटन जिसका, माता कृष्णा, तेरे नाम का बना एक उद्यान, नवूब है चर्चा इसका, हुआ उद्घाटन जिसका।
3. गंगा किनारे इसकी, शोभा ही अद्भुत न्यानी है, माता कृष्णा के नाम से, बिल गई क्यानी-क्यानी है, अलगुन ने दिन-रात एक कर, दिया इसे अंजाम, नवूब है चर्चा इसका, हुआ उद्घाटन जिसका, नवूब है चर्चा इसका, हुआ उद्घाटन जिसका, माता कृष्णा, तेरे नाम का बना एक उद्यान, नवूब है चर्चा इसका, हुआ उद्घाटन जिसका।
4. पहले भी इस मण्डल नें, कितने ही पुष्प बिजलाए हैं, गंगा मईया के तट पर, कितने ही घाट बनाए हैं, छविद्वार के घाटों में ठमें, मिला है पहला स्थान, नवूब है चर्चा इसका, हुआ उद्घाटन जिसका, नवूब है चर्चा इसका, हुआ उद्घाटन जिसका, माता कृष्णा, तेरे नाम का बना एक उद्यान, नवूब है चर्चा इसका, हुआ उद्घाटन जिसका।
5. प्रेम प्रकाश मण्डल के, साँई टेऊँनाम आचार्य हैं, अलगुन साँई भगत प्रकाश जी, मण्डल के प्राचार्य है, अंगत के कल्याण को रहते, तत्पर आठों याम, नवूब है चर्चा इसका, हुआ उद्घाटन जिसका, माता कृष्णा, तेरे नाम का बना एक उद्यान, नवूब है चर्चा इसका, हुआ उद्घाटन जिसका। छविद्वार की, पावन भूमि, जैसा पावन नाम, नवूब है चर्चा इसका, हुआ उद्घाटन जिसका, जिनकी कोख से, जन्मे हैं मेरे, बाबा टेऊँनाम, नवूब है चर्चा इसका, हुआ उद्घाटन जिसका....।

प्रेम प्रकाशी दास हरकेश वधवा,  
समालखा मण्डी ( हरियाणा )





## प्रयागराज महाकुम्भ 2025

कहे टेऊँ काहीं ऐसा मेला नाहीं  
देखा मेला कुम्भ का-गंगा के किनारे  
दिव्य रूप दर्शन-गुरां के निजारे

**कुम्भ में छलकी अमृत की बून्दे**

**परम पूज्य महाराजश्री के  
श्रीमुख से बरसा अमृत रस**

**10 जनवरी 2025 सायंकालीन सत्संग**

बोलो सनातन धर्म की जय, श्री रामकृष्ण भगवान की जय, श्री शंकर भगवान की जय, श्री लक्ष्मीनारायण भगवान की जय, जगदम्बे मैया की जय, गंगा मैया की जय, यमुना मैया की जय, सरस्वति मैया की जय, प्रयागराज धाम की जय, सद्गुरु टेऊँराम महाराज की जय, सद्गुरु सर्वानन्द महाराज की जय, सद्गुरु शान्तिप्रकाश महाराज की जय, सद्गुरु हरिदासराम महाराज की जय, अमरापुर दरबार की जय, प्रेमप्रकाश मण्डल की जय, सर्व सन्तन की जय

श्री राम जय राम जय जय राम श्री राम जय राम जय जय राम  
श्री राम जय राम जय जय राम श्री राम जय राम जय जय  
राम श्री राम जय राम जय जय राम

सतगुरु के सत शब्द का सुमरण कर दिन रैन,  
कह टेऊँ जिह सुमरते चित में उपजे चैन,  
'नाम लेत भव सिंधु सुखाहीं, करहु विचारु सुजन मन  
माहीं'

अक्षरों का जोड़ केवल ना समझना भूल कर,  
इसमें श्री गुरुदेव की है भरी शक्तिप्रखर,  
सर्व मंगल मूल है ये वेद का सत सार है,  
भाव रख मन में जपे जो उसका बेड़ा पार है,  
शब्द सतगुरु देव का आनंद का भंडार है,  
मंत्र सतगुरु देव का आनंद का भंडार है,

जीवनी शक्तिसे खाली शब्द जग के शून्य हैं,  
देवरी शक्तिसे खाली शब्द जग के शून्य हैं,  
पर महा मंत्र गुरु का दिव्य है चैतन्य है,  
कल्पना मन की हटाकर मेटता अंधकार है,  
भाव रख मन में जपे जो उसका बेड़ा पार है,  
शब्द सतगुरु देव का आनंद का भंडार है,  
कल्पतर चिंतामणि सम आश सब पूरण करे,  
आधि व्याधि उपाधि हर के अखंड आनंद उर भरे,  
शब्द सतगुरु देव का आनंद का भंडार है,  
सतगुरु का शब्द भव सागर से तारणहार है,  
भाव रख मन में जपे जो उसका बेड़ा पार है,  
प्रेम बिना पहुंचे नहीं को जन हरि के धाम,  
कह टेऊँ तांते जपो प्रेम सहित हरि नाम,  
राम राम सबको कहे, ठग, ठाकुर और चोर,  
बिना प्रेम रीझे नहीं तुलसी नंदकिशोर,  
मुख सां राम चवे शांति न अचे जीय खे,  
अन्न पाणीअ जे नाम सां उज बुख कीन लहे,  
नगर बांचे कीनकी बिना पंध कये,  
गुरु गम रहत रहे सुखी शे सामी चवे,  
भाव रख मन में जपे जो उसका बेड़ा पार है,  
शब्द सतगुरु देव का आनंद का भंडार है,

**सद्गुरु हरिदासराम  
वचनावली**

सन्त की कृपा एवं पूर्ण गुरु की दया दृष्टि जब तक नहीं होती तब तक परमार्थ की बातें सहज समझ में आने वाली नहीं ।

प्रेम से बोलिए सतनाम साखी, सतनाम साखी, सतनाम साखी,

**सद्गुरु के सत शब्द का सुमरण कर दिन रैन,  
'तस्मात् सर्वेषु कालेषु माम् अनुस्मर युध्य च'**

गीता का ज्ञान और शास्त्रों का ज्ञान, संत गुरुदेव की वाणी का ज्ञान उसमें कोई भी अंतर नहीं, शब्द अलग हैं लेकिन उनका तात्पर्य एक ही है, 'सर्वेषु कालेषु' जितना भी तुम्हें समय मिला है उस समय में नाम का जप करो, 'माम् अनुस्मर' भगवान कहते हैं अर्थात् गुरु शिष्य को कहते हैं कि मेरा स्मरण करो और 'युध्य च' युद्ध भी करो लड़ाई भी करो, संघर्ष भी करो, मन के अंदर जो कुविचार उत्पन्न होते हैं, क्योंकि मन विचारों का पुंज है, न जाने कौन-कौन से ख्याल संशय मन के अंदर चलते रहते हैं, तो कैसे उन मन के विकारों पर विजय प्राप्त की जाए, अनंत विचार जो मन के अंदर उत्पन्न होते हैं और जैसा जैसा मन का चिंतन चलता है वैसा वैसा व्यक्तित्व का निर्माण होता है, जैसे ख्याल जैसा संग और जैसे विचार मन के अंदर चलेंगे उसी प्रकार से अंतःकरण का निर्माण होता जाता है, सत्संग करके, संत महापुरुषों का सानिध्य प्राप्त करके परम गति को प्राप्त करने वाले उदाहरण इतिहास में भरे पड़े हैं और अच्छे घर कुल में जन्म लेकर कुसंग से पतित होने वालों के उदाहरण भी भरे पड़े हैं, तो बहुत बड़ा मन के ऊपर संग का असर पड़ता है, जैसा संग वैसा रंग, इसलिए संत महापुरुषों के संग की महिमा बहुत गाई गई,

**बिन सत्संग विवेक ना होई,  
राम कृपा बिन सुलभ न सोई,  
आहिन अगम अपार राहुँ राम मिलण जूँ,  
तिन सभनी मे हिकिड़ी आहे साध संगत निरवार,  
सामी मिल तहींसां रखी प्रेम प्यार,  
भगवत जो दीदार दिसें भेद भरम रे,**

तो सत्संग के बिना अंतर दृष्टि प्राप्त होने वाली नहीं, अंतर दृष्टि का अर्थ है अंतःकरण में जागृति उत्पन्न हो जाए, सत असत्य का ज्ञान हो, दोनों बातें इस संसार में मिली हुई है, दोनों को अलग करना है, अपनी विवेकशील बुद्धि के द्वारा, दोनों बातों को भिन्न भिन्न करके देखना है,

**'जड़ चेतन गुण दोषमय विश्व कीन करतार,  
संत हंस गुण गहहिं पय तज परिहर विकार'**

तो संत और हंस की एक ही रीत है, जिस प्रकार से हंस पक्षी दूध और जल के मिश्रण को प्राप्त करके उसमें से दुग्ध ग्रहण करके जल का त्याग करता है, उसी प्रकार से संत महापुरुष भी असत् का पाप विचारों का त्याग करके शुभ विचारों को अपने मन में धारण करते हैं, तो महाकुंभ के इस पावन पर्व में गुरु महाराज जी की पावन छत्र छाया में बैठकर के अपने मन को जगाएं, बुद्धि को विचार के द्वारा क्योंकि जहां पर विचार नहीं वहां पर शांति का मार्ग प्राप्त होने वाला नहीं, अविचार के द्वारा हमेशा पतन होता है, तो अपनी विचार शक्ति को शुभ मार्ग में जगाकर गुरुदेव के पावन चरणों में प्रार्थना करें, उनका शब्द अनंत आनंद का भंडार है केवल अक्षर नहीं, संसार की बातें अक्षरों में कही जाती हैं, लेकिन गुरुदेव के द्वारा दिया गया मंत्र वो दिव्य मंत्र है, वो बहुत शक्तियों से भरा हुआ है, जैसे जैसे उस मंत्र का जप किया जाता है भाव के द्वारा, प्रेम के द्वारा, वैसे वैसे उसकी शक्ति प्रकट होती जाती है, तो अनंत ज्ञान का भंडार सद्गुरु स्वामी टेऊराम महाराज जी की अमृतमयी वाणी में अमरापुर वाणी में भरा हुआ है जो हिंदी और सिंधी भाषा में उन्होंने अपने अनुभव की वाणी लिखी और उस वाणी का पठन श्रवण मनन करके अपने मन को संत महापुरुषों के बताए हुए मार्ग पर चलाने का प्रयत्न करेंगे तो लोक परलोक हमारा सुहेला होगा,  
तो गुरु महाराज के पावन चरणों में प्रार्थना करें आसीस मांगें।

**तुम्ही सतगुरु तुम पित माता,  
तुम ही हरिहर तुम ही विधाता,  
हम हैं भिखारी तुम हो दाता,  
बार बार लख बार नमामि।  
जय जय जय टेऊराम स्वामी,  
कृपा करो प्रभु अन्तर्यामी.....**

**सद्गुरु टेऊराम अमृतोपदेश**

जब तक मन में भ्रम है तब तक यह मनुष्य दुःखी होता रहता है। जब ज्ञान प्राप्त होने के कारण उसका भ्रम नष्ट हो जाता है तब यह जीव सुखी होता है।

# सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

जन्म- वैशाख माह, सिन्धी तारीख- 13,  
30 मार्च 1930

माता- मोतिलबाई, पिता- श्री हीरानन्द

जन्म ग्राम- घुंडण, प्रान्त-सिन्ध, देश- अखण्ड भारत

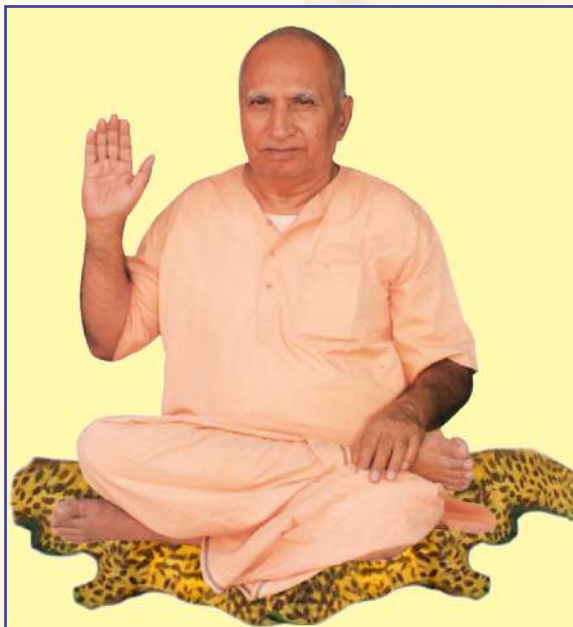
मामा एवं गुरुदेव- सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज  
24 वर्ष की आयु में- अजमेर आदर्श नगर मेले पर सद्गुरु  
स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की शरण ओट ली।

वर्ष 1963- से सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की सेवा  
में रहे, अंत तक तन मन समर्पित कर दिया।

वर्ष 1974- में श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ की छपाई व अन्य ग्रंथों  
पुस्तकों के प्रकाशन में पूरा पूरा समय दिया।

वर्ष 1977- में सद्गुरु महाराज जी के अमरापुर पधारने के  
पश्चात् काफी समय तक अमरापुर में रहकर सत्साहित्य सेवा  
की। सद्गुरु टेऊराम जी महाराज के जीवन चरितामृत का  
हिन्दी में बहुत सुन्दर रूप से अनुवाद के साथ सद्गुरु स्वामी  
सर्वानन्द जी महाराज के जीवन चरितामृत एवं अमरापुर दर्शन  
पुस्तक का सुंदर संकलन सम्पादन प्रकाशन व प्रेम प्रकाश  
मण्डल के समस्त साहित्य को हिन्दी, सिन्धी, गुरुमुखी एवं  
अंग्रेजी में प्रकाशित कराया।

वर्ष 1992- में आपने प्रेम प्रकाश मण्डल का कार्य भार  
सम्हाला। कई शहरों में नये आश्रमों की स्थापना की।



सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जयंती 12 मई विशेष

देश-विदेश में गुरु नाम का प्रचार-प्रसार किया।

वर्ष 2000- 26 अगस्त को लांज़रोते (स्पेन) में प्रातः गुरु  
चरण में पूर्ण समर्पित हुए।

2 सितम्बर 2000- हरिद्वार में जलसमाधि।

## सद्गुरु स्वामी हरिदासराम-सन्देश

- 'हमारी प्रार्थना का 'सार-तत्त्व' क्या होना चाहिए? मुक्ति! 'मुक्ति का सही अर्थ है आवागमन के बन्धन से मुक्त होना.'
- 'आवागमन के बन्धन से मुक्त होना एक पहली ( गुत्थी ) है. पर वह खुलेगी कैसे? जब स्वयं को अन्दर ले जाया जाए. अन्दर जाने का अर्थ होता है-शरीर से सम्बन्ध नहीं होना.'
- 'प्रतीति व प्राप्ति में' भेद होता है. जो दिखता है पर मिलता नहीं उसे प्रतीति कहते हैं और जो मिलता है पर दिखता नहीं उसे प्राप्ति कहते हैं.
- 'देखने, सुनने आदि में आने वाला प्रतिक्षण परिवर्तनशील संसार ( प्रतीति ) केवल दिखाई पड़ रहा है और सर्वत्र,नित्य, परिपूर्ण परमात्म तत्त्व प्राप्त है. हर जीव उसी प्राप्त तत्त्व का ही अंश है. मात्र स्वयं पर दृष्टि जाते ही उसका अनुभव होने लग जाता है.

## सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

आपने ममता की मोह की ये गठरी सिर पर रखी है इसको उतारो,  
नहीं तो अंतकाल ऐसी भारी होगी कि इसके नीचे आप चूरण हो जावेंगे।



## अक्षय तृतीया- आखातीज इसका इतना महत्व क्यों है... ?? जानिए कुछ महत्वपूर्ण जानकारी...

- ▶ आज ही के दिन माँ गंगा जी का अवतरण धरती ( धरा ) पर हुआ था !
- ▶ माँ अन्नपूर्णा का जन्म भी आज ही के दिन हुआ था !
- ▶ द्रोपदी को चीरहरण से श्री कृष्ण जी ने आज ही के दिन बचाया था !
- ▶ श्री कृष्ण और सुदामा का मिलन आज ही के दिन हुआ था !
- ▶ कुबेर जी को आज ही के दिन खजाना मिला था !
- ▶ सतयुग और त्रेतायुग का प्रारम्भ आज ही के दिन हुआ था !
- ▶ ब्रह्मा जी के पुत्र अक्षय कुमार का अवतरण भी आज ही के दिन हुआ था !
- ▶ प्रसिद्ध तीर्थ स्थल श्री बद्री नारायण जी के कपाट इसी दिन से 6 महीने के लिये खोले जाते हैं !
- ▶ वृंदावन के श्री बाँके बिहारी मंदिर में साल में केवल इसी दिन 'श्री विग्रह चरण के दर्शन होते हैं !
- ▶ अन्यथा श्री चरण साल भर वो वस्त्र से ढके रहते हैं !
- ▶ इसी दिन महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ था !
- ▶ अक्षय तृतीया अपने आप में स्वयं सिद्ध मुहूर्त है !
- ▶ कोई भी शुभ कार्य ( विवाह- मुंडन- जनेऊ संस्कार ) एवं नया कार्य का प्रारम्भ किया जा सकता है !
- ▶ इस दिन माता लक्ष्मी देवी जी का पूजन भी किया जाता है !

अक्षय तृतीया “आखातीज ”- इस दिन तीर्थ स्नान (गंगा, जमुना, नर्मदा जल से स्नान), अधिक से अधिक नाम जप, भजन- सुमरण, वस्त्र दान, जल दान, अन्न दान, फल, बर्तन, मीठी वस्तु (शर्बत-मिठाई), पंखा.., जल से भरा हुआ घड़ा (मटका) आदि कन्या, ब्राह्मण, देव स्थान या मंदिर आदि में दान करना चाहिए। जिससे अक्षय फल की प्राप्ति होती है.. जो कभी क्षय न हो !

इस दिन का बड़ा महात्म्य शास्त्रों में बतलाया गया है ! इसलिए अधिक से अधिक शुभ कर्म करके पुण्य अर्जित करें !

## श्री अमरापुर स्थान जयपुर सहित सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर

**मंगलमूर्ति आचार्य  
सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज**

**का चालीहा महोत्सव**

**बुधवार 21 मई से सोमवार 30 जून 2025 तक**

**बड़े ही हर्षोल्लास एवं भक्तिमय वातावरण में मनाया जायेगा**



**सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी**

जिस मनुष्य के पास शुभ कर्मों रूपी टिकिट है,  
वह संसार की यात्रा आसानी से कर सकता है।

# मैं न होता, तो क्या होता,,,?? प्रेरक प्रसंग

‘अशोक वाटिका’ में जिस समय रावण क्रोध में भरकर, तलवार लेकर, सीता माँ को मारने के लिए दौड़ पड़ा तब हनुमान जी को लगा कि इसकी तलवार छीन कर, इसका सिर काट लेना चाहिये! किन्तु, अगले ही क्षण, उन्होंने देखा ‘मंदोदरी’ ने रावण का हाथ पकड़ लिया।

यह देखकर वे गदगद हो गये! वे सोचने लगे, यदि मैं आगे बढ़ता तो मुझे भ्रम हो जाता कि यदि मैं न होता, तो सीता जी को कौन बचाता? बहुधा हमको ऐसा ही भ्रम हो जाता है, मैं न होता तो क्या होता? परन्तु ये क्या हुआ?

सीताजी को बचाने का कार्य प्रभु ने रावण की पत्नी को ही सौंप दिया! तब हनुमान जी समझ गये, कि प्रभु जिससे जो कार्य लेना चाहते हैं, वह उसी से लेते हैं! आगे चलकर जब ‘त्रिजटा’ ने कहा कि ‘लंका में बंदर आया हुआ है, और वह लंका जलायेगा!’

तो हनुमान जी बड़ी चिंता में पड़ गये, कि प्रभु ने तो लंका जलाने के लिए कहा ही नहीं है और त्रिजटा कह रही है कि उन्होंने स्वप्न में देखा है, एक वानर ने लंका जलाई है! अब उन्हें क्या करना चाहिए? जो प्रभु इच्छा!

जब रावण के सैनिक तलवार लेकर हनुमान जी को मारने के लिये दौड़े, तो हनुमान ने अपने को बचाने के लिए तनिक भी चेष्टा नहीं की और जब ‘विभीषण’ ने आकर कहा कि दूत को मारना अनीति है, तो हनुमान जी समझ गये कि मुझे बचाने के लिये प्रभु ने यह उपाय कर दिया है! आश्चर्य की पराकाष्ठा तो तब हुई, जब रावण ने कहा कि बंदर को मारा नहीं जायेगा, पर पूँछ में कपड़ा लपेट कर, घी डालकर, आग लगाई जाये तो हनुमान जी सोचने लगे कि लंका वाली त्रिजटा की बात सच थी, वरना लंका को जलाने के लिए मैं कहां से घी, तेल, कपड़ा लाता और कहां आग ढूँढता?

पर वह प्रबन्ध भी आपने रावण से करा दिया! जब आप रावण से भी अपना काम करा लेते हैं, तो मुझसे करा लेने में आश्चर्य की क्या बात है! इसलिये सदैव याद रखें, कि संसार में जो हो रहा है, वह सब ईश्वरीय विधान है! हम और आप तो केवल निमित्त मात्र हैं! इसीलिये कभी भी ये भ्रम न पालें कि... मैं न होता, तो क्या होता?

संकलित

## थाली में भोजन जूठा नहीं बचाना चाहिये।

रामायण के अनुसार सीता जी की खोज के समय हनुमानजी ने जब रावण की रसोई में प्रवेश किया तब रावण की जूठी थाली देख कर हनुमानजी समझ गये कि रावण की मृत्यु निकट आ गई है, क्योंकि रावण ने थाली में दही जूठा छोड़ रखा था।

भोजन में जूठा छोड़ने वाले की आयु कम होती जाती है। शायद इसी कारण से हमारे पूर्वज खाना खाकर थाली में पानी डाल कर फिर जूठन को घोल कर पी जाया करते थे।

विद्वानों के अनुसार थाली में जूठा भोजन छोड़ना माँ अन्नपूर्णा और माँ लक्ष्मी का अपमान माना जाता है। ऐसा करने से आर्थिक स्थिति कमजोर होती है। साथ ही घर आती लक्ष्मी भी रूठ कर चली जाती है।

भोजन जूठा छोड़ने वाले बच्चे पढ़ाई में कमजोर होते चले जाते

हैं। मन पढ़ाई से धीरे धीरे पूरी तरह हट जाता है। इसलिए बच्चे पहली बार में जितना खा सकते हैं उतना ही परोसें।

थाली में जूठा भोजन छोड़ने से शनि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है। इसके साथ ही चंद्रमा की भी अशुभ दृष्टि व्यक्ति के जीवन पर पड़ने लग जाती है। चंद्रमा की भी अशुभ दृष्टि की वजह से मानसिक बीमारियां भी व्यक्ति को घेर लेती हैं।

इसके अलावा यदि आप यात्रा के दौरान जूठा भोजन फेंकते हैं तो आपके काम कभी नहीं बनते या बनते काम भी बिगड़ने शुरू हो जाते हैं।

थाली में जूठा भोजन छोड़ने से व्यक्ति पाप का भागी बनता है। इसलिए थाली में भोजन उतना ही लेना चाहिए जितना खा सकें और कोशिश करें कि कभी भी भोजन व्यर्थ न हो। यदि किसी कारणवश भोजन थाली में छूट जाता है तो हाथ जोड़कर माँ अन्नपूर्णा से माफी मांगें।

बहुत बढ़िया “खाओ मण भर, छोड़ो न कण भर”

“उतना ही लो थाली में व्यर्थ न जाये नाली में”

संकलित

**सद्गुरु हरिदास राम  
वचनावली**

आचार्य द्वारा चलाई गई प्रथा ही परम्परा कहलाती है वह शास्त्रों के आधार पर होती है। जो कोई शिष्य अपने आचार्य की परम्परा को ज्यों का त्यों बनाये रखता है उसको ही गुरुभक्त कहते हैं।

# ब्रह्मज्ञान का अधिकारी

एक साधक ने किसी महात्मा के पास जाकर उनसे प्रार्थना की कि 'मुझे आत्म साक्षात्कार का उपाय बताइये।' महात्मा ने एक मंत्र बताकर कहा कि 'एकान्त में रहकर एक साल तक इस मंत्र का जाप करो; जिस दिन वर्ष पूरा हो उस दिन नहाकर मेरे पास आना।' साधक ने वैसा ही किया। वर्ष पूरा होने के दिन महात्मा जी ने वहाँ झाड़ू देने वाली भंगिन से कह दिया कि 'जब वह नहा-धोकर मेरे पास आने लगे, तब उसके पास जाकर झाड़ू से गर्दा उड़ा देना।' भंगिन ने वैसा ही किया। साधक को क्रोध आ गया और वह भंगिन को मारने दौड़ा। भंगिन भाग गयी। वह फिर से नहाकर महात्माजी के पास आया।

महात्माजी ने कहा- 'भैया! अभी तो तुम सांप की तरह काटने को दौड़ते हो। साल भर और बैठकर मंत्रजाप करो, तब आना' साधक को बात कुछ बुरी तो लगी, पर वह गुरु की आज्ञा समझकर चला गया और मंत्र जाप करने लगा। दूसरा वर्ष जिस दिन पूरा होता था, उस दिन महात्माजी ने उसी भंगिन से कहा कि 'आज जब वह आने लगे तब उसके पैर से झाड़ू छुआ देना।' उसने कहा- 'मुझे मारेगा तो?' महात्माजी बोले, 'आज मारेगा नहीं, कहकर ही रह जायगा' भंगिन ने जाकर झाड़ू छुआ दिया। साधक ने झल्लाकर दस-पाँच कठोर शब्द सुनाये और फिर नहाकर वह महात्माजी के पास आया।

महात्माजी ने कहा- 'भाई काटते तो नहीं, परंतु अभी भी सांप की तरह फुफकारते तो हो ही। ऐसी अवस्था

में आत्म साक्षात्कार कैसे होगा। जाओ एक वर्ष और जप करो।' इस बार साधक को अपनी भूल दिखायी दी और मन में बड़ी लज्जा हुई। उसने इसको महात्माजी की कृपा समझा और मन ही मन उनकी प्रशंसा करते हुए अपने स्थान पर आ गया। उसने साल भर फिर मंत्र जाप किया। तीसरा वर्ष पूरा होने के दिन महात्माजी ने भंगिन से कहा कि 'आज वह आने लगे तब कूड़े की टोकरी उस पर उड़ेल देना, अब वह खीझेगा भी नहीं।' भंगिन ने वैसा ही किया। साधक का चित्त निर्मल हो चुका था। उसे क्रोध तो आया ही नहीं। उसके मन में उलटे भंगिन के प्रति कृतज्ञता की भावना जाग्रत हो गयी। उसने हाथ जोड़कर भंगिन से कहा- 'माता! तुम्हारा मुझ पर बड़ा ही उपकार है, जो तुम मेरे अंदर के एक बड़े भारी दोष को दूर करने के लिये तीन साल से बराबर प्रयत्न कर रही हो। तुम्हारी कृपा से आज मेरे मन में जरा भी दुर्भाव नहीं आया। इससे मुझे ऐसी आशा है कि मेरे गुरु महाराज आज मुझको अवश्य उपदेश करेंगे!' इतना कहकर वह स्नान करके महात्माजी के पास जाकर उनके चरणों पर गिर पड़ा।

महात्माजी ने उठाकर उसको हृदय से लगा लिया। मस्तक पर हाथ फिराया और ब्रह्म के स्वरूप का उपदेश दिया। शुद्ध अन्तःकरण में तुरंत ही उपदेश के अनुसार धारणा हो गयी। अज्ञान मिट गया। ज्ञान तो था ही, आवरण दूर होने से उसकी अनुभूति हो गयी और साधक निहाल हो गया।

संकलित

ज्ञानमूर्ति पूज्य सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का



**96वाँ जन्मोत्सव**



गुरुवार 8 मई से सोमवार 12 मई 2025 तक

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर सहित समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों पर  
श्रद्धा-उमंग एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा



सद्गुरु देऊराम अमृतोपदेश

साक्षी चेतन परमात्मा सब में एक ही है। इसलिए किसी का भी बुरा नहीं सोचना चाहिए। बल्कि जो आप की बुराई सोचे या करे, उसके साथ भी भलाई ही करनी चाहिए।



## प्रेरक प्रसंग सच्चा भक्त

एक बार श्री काशी विश्वनाथ जी के मंदिर में भगवान् विश्वनाथ की प्रेरणा से एक दिव्य थाल प्रकट हुआ. मंदिर के पुजारी यह देखकर आश्चर्य में पड़ गये.

इस दिव्य थाल पर अंकित था- पूजा करने को आने वाले भक्तों में जो मेरा सच्चा प्रीतिकर भक्त होगा, उस तक यह थाल स्वयं चलकर पहुँच जायगा.

काशी नरेश को इस दिव्य थाल तथा उस पर अंकित संदेश की जानकारी दी गयी. उन्होंने सर्वत्र घोषणा करवा दी कि शिवरात्रि के दिन भगवान् विश्वनाथ जी के सबसे प्रीतिकर भक्त को यह थाल मिलेगा.

शिवरात्रि का दिन था. दूर-दूर से शिवभक्त भगवान् विश्वनाथ जी के मंदिर में पहुँचने लगे. बड़े-बड़े ध्यानी, तपस्वी, भक्तजन, संत-महात्मा, योगी, यति, ज्ञानी मंदिर के समक्ष एकत्रित हो गये. नाम-संकीर्तन, हर-हर महादेव तथा भगवान् विश्वनाथ जी के जयकारों से काशीनगरी गूँज उठी. शिवभक्त हाथों में गंगाजल से भरे पात्र, बिल्वपत्र, धतूरा, प्रसाद आदि लेकर भगवान् विश्वनाथ जी के दर्शन करने लगे. सबेरे से दोपहर के दो बज गये, किंतु वह दिव्य थाल वैसे ही स्थित रहा, किसी भी भक्त की ओर नहीं खिसका.

अचानक एक सीधा-सादा निश्छल ग्रामीण मंदिर

के प्रांगण में पहुँचा. उसके हाथ में पावन गंगाजल से भरा पात्र एवं दोने में बिल्वपत्र आदि थे.

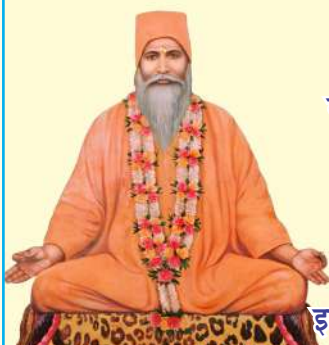
वह ग्रामीण जैसे ही मंदिर के द्वार में प्रवेश करने लगा कि उसने देखा कि दीवार के पास कोने में एक गलित कुष्ठी बैठा हुआ है. उसके शरीर से पीब चू रहा है. भयंकर दुर्गन्ध आ रही है. वह दर्द से कराह रहा है. जो भी उधर से गुजरता, नाक पर वस्त्र रखकर, दुर्गन्ध के कारण मुँह बिगाड़ता तेजी से मंदिर में प्रवेश कर जाता.

उस ग्रामीण भक्त ने यह देखा तो उसका हृदय करुणा भावना से अभिभूत हो उठा. वह कुष्ठी के पास पहुँचा और बोला- भैया, तुम घबराओ नहीं. मैं भगवान् विश्वनाथ बाबा के दर्शन कर आऊँ, तो तुम्हें अपने साथ अपने गाँव ले चलूँगा. तुम्हारा उपचार कराऊँगा- सेवा करूँगा.

वह निश्छल एवं करुणा हृदय भक्त मंदिर के अंदर गया. जैसे ही उसने भगवान् विश्वनाथ जी पर गंगाजल चढ़ाया एवं उस कुष्ठी के कल्याण की कामना की कि वह दिव्य थाल सरककर उसके चरणों तक पहुँच गया. आकाश बाबा विश्वनाथ के जयकारों से गूँज उठा. जब वह बाहर आया तो उसे कुष्ठी की जगह भगवान् विश्वनाथ जी की आकृति की अनुभूति हुई.

## सद्गुरु स्वामी टेऊँराम चालीहा महोत्सव

बुधवार 21 मई से सोमवार 30 जून 2025 तक



सद्गुरु टेऊँराम चालीहा व्रत-साधना में नित्य गुरु दरबार के दर्शन, सद्गुरु टेऊँराम चालीसा पाठ, सत्याचरण, सत्नाम साक्षी माला सुमरण कम से कम 24 मिनट, गुरुमंत्र का अधिकाधिक ध्यान, संभव हो तो नित्य दीपदान, गुरु दरबार की सेवा, सत्संग में भाग लेना, सत्कार्य करना, शनिवार-चौथ को ढोढा चटणी महाप्रसादी का भोग चालीस दिवसीय श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ का पाठ भी घर पर रख सकते हैं जिसका भोग पारायण आश्रम/मंदिर में सामूहिक रूप से किया जा सकता है. इन चालीस दिनों में माँस-मछली-अण्डा-शराब, जुआ आदि सभी दुर्व्यसन वर्जित हैं.

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

जिसकी गुरु कृपा का कण मिल जाता है, उसकी समस्त क्रियाएँ बदल जाती हैं।

## आचार्य सद्गुरु टेऊराम द्वारा रचित भोजन विधि दोहे

1. सात्विक स्वल्प नेम से, जो जन करत अहार। तांको रोग न लागहीं, टेऊं देह मंझार॥
2. काम क्रोम मद मोह से, चहत मुक्तिजो मीत। थोरा भोजन खाय के, कर जिह्वा पर जीत॥
3. जिह्वा जीते होत है, मन इन्द्रियों पर जीत। कह टेऊं सत् बात यह, राखो मन प्रतीत॥
4. रसना रस से होत है, टेऊं रोग अनेक। बचना चाहो रोग से, तजो रसन की टेक॥
5. शुद्ध भोजन से विशुद्ध मन, शुद्ध मन में हो ज्ञान। कह टेऊं निज ज्ञान से, निश्चय हो कल्याण॥
6. भोजन तन सुख हेत है, दुःख के कारण नाहिं। टेऊं जांसे दुःख बढे, मत खाओ तुम ताहिं॥
7. चिकना भोजन देख के, पेट भरे जो खात। कह टेऊं वह मनुष नहिं, जान पशू तिंह तात॥
8. चिकना भोजन जो चहे, तांसे भक्तिन होय। टेऊं सात्विक खाय जो, भक्तिकमावे सोय॥
9. एक बार भोजन करे, महा पुरुष सो जान। करे अल्प पुन बार दो, टेऊं सो बुद्धिमान॥
10. बहु भोजन जो करत है, आयू हो तिस खीन। कह टेऊं सो होत है, पापी दुखिया दीन॥
11. भोजन बहुत न कीजिये, टेऊं सुनिये लोय। बहुत खान से बुद्धि घटे, आलस निद्रा होय॥
12. ठूस ठूस कर कंठ तक, खावत मूर्ख लोक। कह टेऊं वे भोगते, पेट शूल मन शोक॥
13. भूख समय भोजन करे, प्यास समय जल लेत। कह टेऊं सुख पाय सो, धर हृदय में चेत॥
14. मांस खान में पाप बहु, मत को खावे ताहिं। कह टेऊं जो खात है, जावत नको माहिं॥
15. मांस अहार न मनुष्य का, खाते पशू अजान। कहे टेऊं इस खान से, होवे बुद्धि मलीन॥
16. बैल अश्व बानर गधा, मांस न खावत घास। टेऊं मानुष होय के, क्यों तुम खावत मांस॥
17. दूर नगर से करत सब, टेऊं गोर मसान। मांस अहारी पेट घर, करत गोर शमशान॥
18. एक वर्ष भी नेम से, जो शुद्ध करत अहार। कह टेऊं सो देह में, पावत ओज अपार॥



## आरोग्य सम्बन्धी दोहे



1. शीतल जल में डालकर सौंफ गलाओ आप। मिश्री के संग पान करि मिटे दाह-संताप॥
2. फटे विमाई या मुँह फटे, त्वचा खुरदरी होय। नीबू-मिश्रित आँवला सेवन से सुख होय॥
3. सौंफ इलायची गर्मी में लौंग सर्दी में खाय। त्रिफला सदाबहार है, रोग मुक्त हो जाय॥
4. वात-पित्त जब-जब बढे पहुँचावे अति कष्ट। सोंठ आवला, दाख संग खावे पीड़ा नष्ट॥
5. नीबू के छिलके सुखा बना लीजिये राख। मिटे वमन मधु संग ले बड़े वैद्य की साख॥
6. लौंग इलायची चाबिये, रोजाना दस पाँच। हटे श्लेष्मा कण्ठ का रहो स्वस्थ है साँच॥
7. स्याह नौन हरड़े मिला इसे खाइये रोज। कब्ज गैस क्षण में मिटै सीधी-सी है खोज॥
8. पत्ते नागरबेल के हरे चबाये कोय। कण्ठ साफ-सुथरा रहे रोग भला क्यों होय॥
9. खाँसी जब-जब भी करे, तुमको अति बैचेन। सिंकी हींग अरु लौंग से मिले सहज ही चैन॥
10. छल-प्रपंच से दूर हो जग-मंगल की चाह। आत्मनिरोगी जन वही गहे सत्य की राह॥

**सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी**

भगवान के कृतघ्न नहीं बनें। उनकी कृपा के लिए बार-बार उनके आभार मानें। उन्होंने आपको जो कुछ भी दिया है उस पर प्रसन्नचित होकर रहें।





## साधक और भजन मार्ग के पथिक के लिए बहुत ही काम की बात

श्री हित अम्बरीष जी महाराज

हमारे पुराणों में एक कथा मिलती है, एक ऋषि तप कर रहे थे, उनके तप का तेज बढ़ा, उनकी तपस्या का तेज बढ़ा तो वहाँ देवताओं को चिन्ता हो गयी, देवताओं को चिन्ता क्यों होती है? क्योंकि वे दुर्बल हैं, भीतर से क्यों दुर्बल हैं? क्योंकि उनके जीवन में विषय का भोग बहुत है, जब जीवन में विषय का भोग बहुत होगा तो बाहर से भले लीपा पोता हुआ व्यक्ति दिखाई दे लेकिन भीतर से वो बहुत दुर्बल होता है, ध्यान करना, वो भीतर से बहुत दुर्बल होता है, तो वहाँ ऋषि तपस्या कर रहे हैं, अच्छा ऋषि को कुछ लेना देना नहीं है पर देवताओं को चिन्ता हुई, उन्होंने अनेक अनेक उपक्रम किए कि भाई इनकी तपस्या भंग की जाए, पर वो ऋषि तो अपने आसन में स्थित थे, दृढ़ संकल्पित थे, अब अन्त में देवराज इन्द्र को स्वयं आना पड़ा, अब देवराज इन्द्र ने कहा कि भाई सीधे सीधे तो इनके सामने नहीं जा सकते, कहीं ऐसा न हो कि आँख खुले और दृष्टि के तेज से ही हमारा कार्य पूर्ण हो जाए, तो भाई सीधे सीधे तो नहीं जाएंगे, अच्छा देवता अपना कार्य सिद्ध करने में बड़े निपुण होते हैं, वो बड़े कुशल होते हैं, इन्द्र ने क्या किया एक राजा का वेश धारण किया और बड़े आदर से, बड़े विनम्र भाव से ऋषि को जाकर प्रणाम किया, ऋषि ने आँख खोली, देखा राजा है और अतिथि होकर आया है, तो सेवा करना धर्म है, तो राजा ने कहा कि ऋषिवर ये जो आपके आश्रम का वातावरण है बड़ा सुंदर सुखद है, कुछ दिन मेरी यहाँ पर विश्राम करने की इच्छा हो रही है, क्या मैं रह सकता हूँ, ऋषि ने कहा कि आप राजा हैं, आपका अधिकार है और आप अतिथि होकर आए हैं, आप अवश्य रहिए, तो राजा ने कहा ठीक है ये मेरी जो खड़ग है ये हमारे लिए पूज्य है, मैं केवल ये खड़ग आपके पास रख देना चाहता हूँ, इसके लिए मुझे कोई सुंदर दिव्य आसन चाहिए, तो आपके साथ बस मैं खड़ग रख देना चाहता हूँ, ऋषि ने कहा हाँ हाँ रख दीजिये, अब केवल वो खड़ग पास में रखी है, सच्ची घटना है, केवल

वो खड़ग पास में रखी है, एक दिन ऐसे ही ऋषि अपने ध्यान में लीन, और एक बन्दर, एक मरकट आकर कुछ उछल कूद सी करने लगा, ध्यान में उनके कुछ विक्षेप सा हुआ, क्रोध आया, ऋषि बड़े आश्चर्य में कि अरे आज तक कभी क्रोध आया नहीं, आज क्रोध क्यों आया, दूसरे दिन फिर ऐसी घटना हुई, थोड़ा और क्रोध आया, तीसरे दिन तो इतना क्रोध आया कि वो खड़ग उठाई और उस वानर पर प्रहार कर दिया, बस जैसे ही वानर पर प्रहार किया तप का तेज क्षीण हुआ, काम हो क्रोध हो इनका जो वेग होता है ये आपकी शक्ति क्षीण कराता है, विषय का भोग करने के बाद व्यक्ति निश्तेज पड़ जाता है कि नहीं पड़ जाता, शक्ति क्षीण होती है न, यदि, कल हमने चर्चा की थी न कि “भगतां की चाल निराली के री बीखम मार्ग चलना” कठिन मार्ग पे चलना है तो शक्ति का संशय करना पड़ेगा, यहाँ भले बुरे का प्रश्न नहीं है, यहाँ पाप पुण्य का प्रश्न नहीं है, विषय भोग से पाप होता है प्रश्न ये नहीं है, प्रश्न ये है, बात ये है कि भाई कठिन मार्ग पर जाना है तो शक्ति का संशय करना पड़ेगा, जब भी ध्यान करना, जब भी काम या क्रोध का वेग आएगा उसके बाद आप देखेंगे कि वो साथ साथ सारी सकारात्मक शक्ति आपकी ले गया, **your vital energies**, वो सारी आपकी साथ में ले गया, वो थोड़ी देर का जो वेग था, उसने आपको भीतर से निश्तेज कर दिया, कल भी मैंने आपको कहा था न कि आप केवल दिखाई नहीं देते हो यहाँ पर आपका आभामण्डल भी कुछ कहता है, आपके मुख की आभा प्रभा भी कुछ कहती है, आपका चिन्तन कैसा है, आपके जीवन में शक्ति का संशय है कि नहीं ये आपका मुखमण्डल बता देगा, आपको देखकर जाना जा सकता है, कि आप अपने जीवन में शक्ति का सदुपयोग कर रहे हो, दुरुपयोग कर रहे हो, व्यय कर रहे हो, अपव्यय कर रहे हो या संशय कर रहे हो, क्योंकि बीखम मार्ग चलना, तो जैसे ही वो क्रोध आया, उनके तप का क्षीण हो गया, और यही देवता

संकलित

**सद्गुरु हरिनासराम  
वचनावली**

गलत तरीके से पैसा कमाना या दूसरों को दुःख देकर पैसा कमाना—  
ये भी एक तरह की हिंसा है।

## जब अकबर ने बीरबल से पूछा -तुम्हारा परमात्मा इतने अवतार क्यों लेता है ?

श्री राजेन्द्रदास जी महाराज

चाहते थे कि किसी प्रकार इनके तप का तेज क्षीण हो जाय, ये सब हुआ कैसे, केवल उस वस्तु का जो संग था न, उसके कारण मन में विकार उत्पन्न हुआ तो केवल व्यक्ति का संग ही कुसंग नहीं होता वस्तु का संग भी कुसंग होता है, जो बहुत अधिक शीलवान होते हैं, अत्यंत सुशील होते हैं शीलवान होते हैं, उनसे कोई अपनी अंतर व्यथा का निवेदन करे, अपनी पीड़ा का निवेदन करे, अपने कष्ट का निवेदन करे तो वे इतने अधिक द्रवित हो जाते हैं कि उस दुखी व्यक्ति के दुख को दूर करने के लिए समर्थ होते हुए किसी नौकर चाकर सेवक को नहीं भेजते हैं वो सोचते हैं जब तक किसी व्यक्ति को मैं बुलाऊंगा समझाऊंगा, पता नहीं ठीक से समझेगा कि नहीं, समझेगा और करेगा तो ठीक से करेगा कि नहीं करेगा, तो वे क्या करते हैं कि इतना लोगों को बुलाएं समझावें, कहें फिर भेजें इससे अच्छा है इस आर्त व्यक्ति की पीड़ा को दूर करने के लिए मैं स्वयं ही पहुंच जाऊं तो भगवान स्वयं अवतार ले लेते हैं हमारे पूज्य महाराज जी कहते थे कि एक बार मुगल बादशाह अकबर ने बीरबल से पूछा कि बीरबल तुम्हारे हिंदू धर्म की कई बातें समझ में नहीं आती, क्या? कोई कष्ट आया और लोगों ने पुकारा तो तुम्हारा परमात्मा फट से धरती पर अवतार ले लेता है, हमारा जो अल्लाह है ना खुदा वह खुद नहीं आता है, वह अपने पैगंबर भेजता है, अपने आचार्य भेजता है, तो तुम्हारे भगवान के पास ऐसी कोई सुविधा नहीं है कि कोई पुकारे कोई कष्ट आवे तो किसी को भेज दे, उसके पास कोई नहीं है अरे हम बादशाह हैं तो हमारे पास कितने नौकर चाकर हैं, उसके पास कोई सुविधा नहीं है, किसी को भेज देना चाहिए बार-बार स्वयं ही परेशान क्यों होता है तुम्हारा परमात्मा इसका उत्तर दो, बीरबल तो विचित्र ही था, बुद्धि उसकी विलक्षण थी, आखिर तो ब्राह्मण था, बीरबल ने कहा कि

जहांपनाह मैं इसका उत्तर जरूर आपको दूंगा लेकिन समय आने पर दूंगा अभी नहीं, अरे बोले समय कब आएगा तुम भूल जाओगे हम भूल जाएंगे, बोले आप भले ही भूलो मैं नहीं भूलूंगा, मैं तो उसका उत्तर देकर ही समाधान करूंगा अवश्य समाधान करूंगा बादशाह ने कहा ठीक है, हमको तो समाधान चाहिए, अकबर का एक मात्र पुत्र था सलीम जिसको आगे चलकर जहांगीर कहा गया उसका एक नाम सलीम था तो सलीम बहुत प्यारा था अकबर को, छोटा बच्चा प्यारा होता ही है, फिर बादशाह का लड़का है, कितना प्यारा होगा, बहुत सुंदर था बड़ा सलोना था, तो बीरबल ने सलीम की एक मोम की मूर्ति बनवाई उतने ही आकार की और कपड़ा लत्ता पहना के ऐसा उसको सजा दिया कि दूर से देखकर यह कोई समझ ना पावे कि यह असली है कि पुतला है यह समझ ना पावे और बोले महाराज देखो गर्मी का समय है जमुना जी में थोड़ा जल विहार किया जाए तो कितना बढ़िया चांदनी रात है जेष्ठ की पूर्णिमा है क्या बढ़िया सिरि सिरि हवा चल रही है, यमुना जी में जल विहार करें रात्रि के समय, बादशाह को बहुत अच्छा लगा बोले बहुत अच्छी बात मेरी भी इच्छा थी, तो एक नौका पर तो बादशाह सवार हुआ और दूसरी नौका पर बीरबल बैठ गया, बोले जहांपनाह मैं तो आपका नौकर ही हूं, आप बेगम साहिबा के साथ इस पर मैं यहां रहता हूं तो बेगम को पहले राजी कर लिया था वो जो पुतला था ना सलीम का उसकी गोद से ले लिया बीरबल ने बगल में साथ ही साथ नौका चल रही थी उसमें बार-बार चचकारे, पुचकारे, खिलावे उसको, बादशाह देखे उसको ये नहीं समझे पुतला है वो समझे मेरा बेटा ही है, तो भाई बीरबल बहुत लाड़ प्यार दुलार कर रहे हो और जैसे ही बीच धार में पहुंचा पहुंचते ही तत्काल उसको खिलाते खिलाते जमुना जी में फेंक दिया, अब बादशाह ने आव

सद्गुरु टेऊराम अमृतोपदेश

जिन महापुरुषों की वाणी वेद के समान है, उनकी सेवा करनी चाहिए। जब वे महात्मा सेवा करने पर प्रसन्न हो जाते हैं तब जिज्ञासु को आत्मज्ञान देकर अमर बनाते हैं।





देखा ना ताव, तुरंत बीच अगाध भरी हुई यमुना जी के जल की धारा के मध्य बादशाह स्वयं कूद पड़ा, तैरना तो जानता ही था, और तमाम मल्लाह पास में थे तैराक बादशाह के शरीर की सुरक्षा के लिए वे भी कूद पड़े बादशाह को बचाने के लिए और बादशाह ने जब पुतला पकड़ा तो वह तो डूबने वाला कहां था वह तो मोम का पुतला था तो बादशाह को पकड़ कर के नौका पर तो चढ़ा लिया गया पर उसने बहुत नाराजगी व्यक्त की, बीरबल को बुलाया इधर आओ, बीरबल आया बोले तुम एकांत में कोई मखौल करो तो कोई बात नहीं इतने हमारे नौकर चाकरों के बीच में बेगम के निकट तुमने इतना हमारा मजाक उड़ाया, मजाक बनाया, मखौल किया मेरे साथ कैसे आदमी हो तुम, हजूर मखौल किस बात का, मेरा मैं भला क्या आपसे मखौल कर सकता हूं, मैंने तो आपके प्रश्न का उत्तर दिया कौन सा प्रश्न आपने कहा था पूछा था कि तुम्हारे हिंदुओं का परमात्मा बार-बार अवतार क्यों ले लेता है अपने किसी दूत को सेवक को पैगंबर को क्यों नहीं भेजता तो हम आपसे पूछ रहे हैं कि आपका पुत्र डूबा जल में गिरा तो आपका हम भी आपके सेवक थे हमको कह देते मंत्री आपके वजीर पास में थे उनको कह देते तमाम नौकर चाकर थे नौका चलाने वाले को कहते ए मेरा लड़का गिर गया उठाओ निकालो, आपने किसी को कहा नहीं स्वयं क्यों कूद पड़े, बादशाह बोले वाह क्यों ना कूदता अरे हमें यह पता होता कि मोम का पुतला है तो नहीं कूदता हम तो उसे असली समझ रहे थे जब तक दूसरे को कहेंगे बुलाएंगे समझाएंगे तब तक तो वो डूब के मर ही जाएगा, इसलिए उस अपने एक मात्र पुत्र को बचाने के विचार से मैं अपनी बादशाहियत भूलकर भी कूद पड़ा, बीरबल ने कहा महाराज तुम एक बेटे के बाप हो तुम्हारे भीतर इतना वात्सल्य है तो जो परमात्मा वात्सल्य गुण का अगाध समुद्र है उस परमात्मा को पीड़ित आर्त होकर के कोई पुकारे और वो स्वयं ना आवे तब तो परमात्मा दया सागर कृपा

सागर वात्सल्य सागर सिद्ध नहीं होगा फिर तो वह परमात्मा ही सिद्ध नहीं होगा इसलिए सच्चा भगवान वही है जो भक्तों की पुकार सुनकर उनके दुख दर्द को दूर करने के लिए अवतार ले ले अकबर मान गया बोले भाई बात बिल्कुल सही है, पीर पैगम्बर भेजना ठीक नहीं स्वयं ही आना चाहिए, बीरबल ने कहा भगवान अपने पार्षद भी भेजते हैं लेकिन जब आवश्यकता होती है तो पार्षदों को ना भेजकर स्वयं ही कृपा करके पधारते हैं। संकलित

## सत्संग का महत्व

एक आदमी ने सत्संग में सुना कि जिसने जैसे कर्म किये हैं उसे अपने कर्मों के अनुसार वैसे ही फल भी भोगने पड़ेंगे तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ।

ये सुनकर उसने सत्संग करने वाले संत जी से पूछा- संत जी! अगर कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा तो फिर सत्संग में आने का क्या फायदा है?

संत जी ने एक ईंट की तरफ इशारा करके कहा- तुम इस ईंट को छत पर ले जाकर मेरे सर पर फेंक दो।

आदमी बोला- संत जी! इससे तो आपको चोट लगेगी और दर्द भी होगा संत जी ने कहा- अच्छा।

फिर उसे उसी ईंट के भार के बराबर का रुई का गट्टा बांध कर दिया और कहा - अब इसे ले जाकर मेरे सर पर फेंकने से भी क्या मुझे चोट लगेगी? वो बोला- नहीं।

संत जी ने कहा- बेटा! इसी तरह सत्संग में आने से इंसान को अपने कर्मों का बोझ हल्का लगने लगता है और वो हर दुख तकलीफ को परमात्मा की दया समझकर बड़े प्यार से सह लेता है।

**सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश**

उदारता का गुण मन पर है, धन पर नहीं,  
बड़प्पन का गुण बुद्धि पर है, आयु पर नहीं।

## हिंदू नववर्ष नव संवत्सर 2082 के पंचांगों में स्वामी टेऊराम जयंती प्रकाशित करने पर संतो ने किया आभार व्यक्त

जयपुर। श्री प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक आचार्य श्री १००८ सदगुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज, जो कि सिंधी समाज के एक महान सिद्ध संत, महापुरुष हुए हैं ! जिनके द्वारा एक आध्यात्मिक (आठ सौ पृष्ठिय महाग्रंथ) श्री प्रेम प्रकाश गंध की भी रचना की गई। जिसमें संत कबीर, मीरा, सूरदास, मलूकदास, रसखान, गुरु नानक देव, दादू दयाल आदि संत महात्माओं के सदृश भजन, छंद, दोहे, कवित, श्लोक माला, वाणी आदि आध्यात्मिक रचनाएं रची गई हैं !



ऐसे सिद्ध संत महापुरुष की जयंती एवं पुण्य विश्व के जाने माने कैलेंडरो पंचांगों में प्रकाशित होने पर संत समाज अभीभूत है! जयपुर के हंसा प्रकाशन के द्वारा हंसा तिथि निर्णय काल दर्शक, जयपुर गीता प्रकाशन का तिथि निर्णय, दिल्ली का राजधानी पंचांग, जय मार्टण्ड पंचांग, और जयपुर बंसीधर पंचांग, नीमच का निर्णय सागर, अजमेर, जयपुर का श्री अमरापुर विजय पंचांग, सतनाम साक्षी पंचांग, भगवान श्री झूलेलाल पंचांग, गुरु-धाम पंचांग, जयपुर पंचांग, श्री मेवाड़ पंचांग, ज्योतिष सम्राट पंचांग, अखिलभारतवर्षीय पंचांग, राज

पचार पंचांग, श्री जयमार्तंड पंचांग, सनातन पंचांग ऐसे ही अनेक संस्थाओं और समितियों द्वारा हिंदू नववर्ष, नव संवत्सर २०८२ आदि अनेक शहरों, राज्यों से प्रकाशित होने वाले कैलेंडर हिंदू पंचांगों में १ जून २०२५ (रविवार) स्वामी टेऊराम पुण्य तिथि एवं ३० जून २०२५ (सोमवार) स्वामी टेऊराम जयंती प्रकाशित की गई है !

**राजस्थान पत्रिका के कैलेण्डर में भी १ जून 2025 (रविवार) स्वामी टेऊराम पुण्य तिथि एवं 30 जून 2025 (सोमवार) स्वामी टेऊराम जयंती प्रकाशित की गई है !**

ऐसे सिद्ध संत महापुरुष की जयंती विश्व के जाने माने कैलेंडरो पंचांगों में प्रकाशित होने पर संत समाज अभीभूत है ! इस पुनीत कार्य के लिये श्री प्रेम प्रकाश संत मण्डल ने प्रकाशक बंधुओं, ज्योतिषाचार्यों को साधुवाद देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है.

साथ ही संतो ने आग्रह किया है कि 'आचार्य श्री १००८ सदगुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज' की वाणी (दोहे, पद, छंद, कवित, भजन) आदि हिंदी पाठ्य पुस्तकों में शामिल होनी चाहिए !!!



**सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी**

मन में किसी वस्तु की चाह रखना ही दरिद्रता है।



## श्री अमरापुर स्थान जयपुर में निःशुल्क योग एवं फिजियोथेरेपी शिविर सम्पन्न

जयपुर। आस्था के पावन केंद्र श्री अमरापुर स्थान जयपुर में रविवार २७ अप्रैल को साप्ताहिक शिविर में ZEN DENN योग साधना एवं फिजियोथेरेपी शिविर का आयोजन अमरापुर सेवा समिति के संयुक्त तत्वाधान में किया गया। निःशुल्क शिविर का आयोजन प्रातः ६ बजे से दोपहर १२ बजे तक किया गया। शिविर का शुभारंभ प्रातः ६ बजे पूज्य स्वामी मनोहर लाल जी महाराज एवं पूज्य संत श्री मोनूराम जी महाराज द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। शिविर के अंतर्गत मोटापा, थायरॉइड, कमर दर्द, घुटने का दर्द, गर्दन का दर्द, रक्तचाप, मांसपेशियों में दर्द आदि का योग विशेषज्ञ श्रीमती दीप तनेजा द्वारा निःशुल्क उपचार एवं परामर्श प्रदान किया गया। वहीं फिजियोथेरेपी शिविर के अंतर्गत फिजियोथेरेपिस्ट श्वेता बेलारामानी चिकित्सक द्वारा बताया गया कि इस पद्धति के द्वारा पुराने से पुराने शारीरिक दर्द का उपचार सरल प्रकार से किया जा सकता है, जिससे बहुत ही कम समय में आराम महसूस होता है।



संतो ने बताया कि योग से शरीर मजबूत और लचीला बनता है, योग में किए जाने वाले आसनो से मांसपेशियां मजबूत होती हैं और जोड़ों का लचीलापन बढ़ता है। योग करने से शरीर की जागरूकता बढ़ती है और एकाग्रता शक्ति में वृद्धि होती है। फिजिकल थेरेपी के जरिए लोगों को चोट से उबरने और शरीर की अधिकतम गति और शारीरिक कार्य को बनाए रखने में मदद मिलती है। प्रतिदिन योग करने से शरीर निरोगी रहता है। शिविर में सैकड़ों की संख्या में लोगों ने लाभ लिया।

### “श्रद्धा-सुमन”

जयपुर। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादियों द्वारा निर्दोष हिन्दू सैलानियों की कायरतापूर्वक की गई हत्याओं का प्रेम-प्रकाश सेवा मंडली, श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल, श्री अमरापुर सेवा समिति, प्रेम प्रकाश महिला मण्डल एवं स्वामी टेऊराम हॉस्पिटल (अग्रवाल फार्म) आदि की ओर से गहरी निंदा करते हैं !

इस आतंकी हमले में जयपुर के ‘लाल’ नीरज उधवानी भी शहीद हुए ! हम सभी श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए ईश्वर एवं श्री गुरु-महाराज जी से प्रार्थना करते हैं कि पुण्य आत्मा को अपने ‘श्री-चरणों’ में निवास दे एवं उधवानी परिवार को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रधान करे ! साथ ही राज्य सरकार से माँग करते हैं कि स्व.नीरज को शहीद का दर्जा देते हुए किसी राजकीय विद्यालय या किसी सर्किल का नामकरण इनके नाम से किया जावे !

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

**सद्गुरु हरिदासराम  
वचनावली**

जब हम अपना मन और बुद्धि दोनों ही गुरु को अर्पित करेंगे  
तब ही हमें गुरु का सच्चा आशीर्वाद मिलेगा।

## स्वामी टेऊराम चिकित्सालय में दन्त चिकित्सा इकाई का हुआ शुभारंभ

जयपुर। सेवा परमो धर्म के उपदेशों का अनुसरण करते हुए आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से हजारों हज़ूर पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की असीम प्रेरणा कृपा से स्वामी टेऊराम चिकित्सालय मानसरोवर में 9 मई २०२५ गुरुवार “दंत चिकित्सा” की सेवा का शुभारंभ पूज्य महाराजश्री के पावन करकमलों द्वारा किया गया है। अत्याधुनिक मशीनों द्वारा सुगमतापूर्वक वरिष्ठ दंत चिकित्सक डॉ. राहुल मोटवानी द्वारा दांतों की सभी बीमारियों का उपचार किया जाएगा। सेवा के क्षेत्र में अग्रणीय श्री अमरापुर जनकल्याण चैरिटेबल ट्रस्ट जयपुर द्वारा पिछले २४ वर्षों से लगातार जनसेवा में समर्पित सद्गुरु टेऊराम हॉस्पिटल एवं स्वामी शांति प्रकाश नेत्र चिकित्सालय में न्यूनतम दरों पे सर्व धर्म समाज हेतु उपचार उपलब्ध है।



अग्रवाल फार्म, विजयपथ स्थित सद्गुरु टेऊराम हॉस्पिटल में प्रतिदिन प्रातः ६ बजे से दोपहर १.०० बजे तक नेत्र चिकित्सकों के साथ साथ जनरल फिजिशियन, हड्डी रोग विशेषज्ञों, होम्योपैथिक चिकित्सकों द्वारा सेवाएं प्रदान की जाती हैं। प्रतिदिन लगभग २०० से अधिक मरीजों द्वारा वरिष्ठ एवं अनुभवी चिकित्सकों से परामर्श लिया जा रहा है। तीन मंजिला अत्याधुनिक हॉस्पिटल के अंतर्गत प्रत्येक शनिवार को लगभग ३५ निःशुल्क आंखों के सफल ऑपरेशन किए जाते हैं। चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा मात्र १०/ रुपए का पंजीयन शुल्क लिया जाता है जो २ दिन के लिए वैध होता है उस शुल्क के अंतर्गत डॉ. द्वारा लिखी दवाईयां भी सहजता के अनुसार उपलब्ध कराई जाती हैं। हॉस्पिटल के अंतर्गत ही प्रयोगशाला में नाम मात्र शुल्क पे अत्यधुनिक मशीनों द्वारा रक्त, पेशाब, मधुमेह आदि की जांच की जाती है।

## अमरापुर गमन



### श्री अशोक कुमार वासवानी

बैरागढ़/भोपाल। कर्मठ, मृदुभाषी श्री अशोक कुमार वासवानी सुपुत्र अमरापुरवासी श्री हरुमल वासवानी दिनांक ३ अप्रैल २०२५ को इस सांसारिक देह का परित्याग कर श्री अमरापुर धाम सिधारे। बैरागढ़ भोपाल में नवनिर्मित होने वाले आश्रम की सम्पूर्ण व्यवस्था श्री अशोक वासवानी के सुपुर्द थी।



### श्रीमती शीला देवनानी

ब्यावर। श्रीमती शीला देवनानी धर्मपत्नि श्री रामचन्द्र जी देवनानी ७५ वर्ष की आयु पूर्ण कर दिनांक १० अप्रैल २०२५ को इस नश्वर संसार का त्याग कर पूज्य आचार्य श्री के पावन

श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारी।

श्री प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मंडली द्वारा दिवंगत आत्माओं को अमरापुर लोक में अपनी चरण-शरण में रखने हेतु आचार्य सत्गुरु स्वामी श्री टेऊराम जी महाराज व प्रभु परमात्मा से पल्लव पाकर प्रार्थना की गई।

**सद्गुरु टेऊराम अमृतोपदेश**

विवाह आदि शुभ अवसरों पर मांस और शराब का प्रयोग करना महापाप है।





## श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का यात्रा कार्यक्रम



16 अप्रैल 2025	यवतमाल
17-18 अप्रैल 2025	अमरावती
19-20 अप्रैल 2025	नागपुर
21-25 अप्रैल 2025	इन्दौर
26-27 अप्रैल 2025	उज्जैन-बैरागढ़ ( भोपाल )
28-29 अप्रैल 2025	रतलाम
30 अप्रैल से 1 मई 2025	जयपुर
02 मई 2025	यात्रा
03-07 मई 2025	हांगकांग
08-11 मई 2025	जापान
12-15 मई 2025	सिंगापुर
16-21 मई 2025	जकार्ता
22-26 मई 2025	मेलबोर्न ( ऑस्ट्रेलिया )
27 मई 2025	यात्रा
28 मई 2025	जयपुर
29 मई से 01 जून 2025	अजमेर ( सद्गुरु टेऊराम वसी उत्सव )

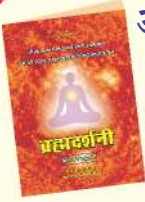


27 अप्रैल 2025- रविवार- अमावस्या  
29 अप्रैल 2025- मंगलवार- चन्द्र दर्शन  
30 अप्रैल 2025- बुधवार- अक्षय तृतीय, आखातीज  
03 मई 2025- शनिवार- चौथ (मंगलमूर्ति सद्गुरु स्वामी श्री  
टेऊराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)

08 मई 2025- गुरुवार- एकादशी  
12 मई 2025- सोमवार- वेशाख पूर्णिमा  
12 मई 2025- सोमवार- सद्गुरु हरिदासराम महाराज जयन्ती  
16 मई 2025- शुक्रवार- गणेश चतुर्थी  
21 मई 2025- बुधवार- साईं टेऊराम चालीसा प्रारम्भ  
23 मई 2025- शुक्रवार- एकादशी  
26 मई 2025- सोमवार- सोमवती अमावस्या  
28 मई 2025- बुधवार- चन्द्र दर्शन

### सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

संसार भी एक भूल भुलैया है। इसमें सत्त्व, रज और तम इन गुणों से उत्पन्न होने वाली वृत्तियाँ, जो बहुत घुमाव-फिराव वाली गलियाँ हैं।



आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊराम महाराज द्वारा रचियलु

## ‘ब्रह्मदर्शनी’

सिंधीअ में समुजाणी

-प्रो. लछमण परसराम हर्दवाणी (पुणे)

पोए मार्च २०२५ अंक खां अगिते-

॥ दशपदी - 18 ॥

साधु संगत में नितप्रति आवे, सन्तों आगे सीस झुकावे।  
सर्व जगत का फुरना त्यागे, हरी कथा रस में अनुरागे।  
सन्त दरस में दृष्टि लगावे, सन्त वचन में सुरति मिलावे।  
श्रवण कर मन माहिं विचारे, दुर्गुण तज शुभ गुण को धारे।  
हरि की कथा माहिं जो राचा, कह टेऊं सो श्रोता साचा ॥ 3 ॥

हिन दशपदीअ में सत्गुरु स्वामी टेऊराम महाराज ‘श्रोता’ ( श्रवणु कंदड़, बुधंदड़, प्रवचनु बुधंदड़ ) जो वर्णनु कयो आहे. चवनि था, “जेको नेम सां साधू-संतनि जे संग में अचे थो, सत्संग में अचे थो; जेको सचनि संतनि सामुहं पंहिंजो शीषु/ सिरु झुकाए थो; जेको सारे संसार जा फुरणा ( सन्सा, भरम, खोटा खयाल ) त्यागे थो; जेको भगवान जे कथाउनि जो रसु ( आनंदु ) प्रापति करण में लीनु थिए थो; जेको संतनि जो दर्शनु करण लाइ वाझाए थो; संतनि जे वचननि में पंहिंजी सुरति मिलाए थो; जेको उहे वचन बुधी पंहिंजे मन में वीचारु करे थो; जेको बुरा गुण त्यागे सुठा गुण अंगीकारु करे थो; जेको हरीअ जूं कथाऊं बुधण में रडिजी वजे थो, मगनु थी वजे थो, उहो सचो ‘श्रोता’ आहे.”

भगितीअ जे खेतूर में ‘नवविधा’ भगितीअ जो महत्तु आहे. नवनि प्रकारनि जे भगितीअ में ‘श्रवण-भगिती’ अचे थी. ‘श्रवण’ जो अर्थु आहे सुणणु, बुधणु, श्रद्धा सां बुधणु. तत्त्वज्ञान जे शब्दनि में चइजे त ब्रह्म/परमेश्वर जी एकता जे साख्यात्कार जो साख्यात साधनु मानों श्रवण. ‘वेदान्त-वाक्य’ बाबत वीचारु करणु ऐं वेदान्त-वाक्य जे तात्पर्य जो निश्चो करण खे ‘श्रवण’ चवंदा आहिनि. श्रवण में ही गाल्हियूं अची वजनि थियूं- सत्संग में, संतनि जे संग में श्रद्धा सां, भगिती-भाव सां श्रवण करणु/बुधणु; गुरूअ जे मुख मां उचारु कयल ‘महावाक्य’ कननि सां श्रद्धा रखी सुणणु, अगर को शकु हुजे त उन ते वीहर वीचारु करणु. आसान भाषा में चई सधिजे थो त ‘श्रवण’ जो अर्थु आहे सत्संग में वजी परमेश्वर जा गुण ऐं महिमा सुणणु. अहिडो श्रवणु कंदड़ खे ‘श्रोता’ चवंदा आहिनि. सत्गुरु स्वामी टेऊराम महाराजनि इन दशपदीअ में सचे श्रोता जा लक्षण या उहिजाण बुधाया आहिनि. इहो सचु आहे त भक्त खे या साधारण मनुष खे पिणु सत्संग में वजी, हरि-कथा, परमेश्वर जूं लीलाऊं या महिमा बुधणु घुरिजे. मन में संतोषु प्रापति करण लाइ ‘श्रवण’ करणु ज़रूरी आहे.

(हलदंडु)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक : संतोष पंजवानी द्वारा मुद्रक : सुनील पंजवानी, सत्री प्रिन्टर्स, मामा का बाजार, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित करवाकर, 401-झूलेलाल अपार्टमेंट, कृष्णा एन्क्लेव, समाधिया कॉलोनी, तारागंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 से प्रकाशित किया गया।

कार्यालय: प्रेम प्रकाश सन्देश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढवे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474001 ( कार्यालय फोन 0751-4045144 पर सम्पर्क समय प्रातः 8 से 10 बजे तक ( तात्कालिक व्यवस्था )

सम्पादक : प्रहलाद सबनानी

प्रबन्ध सम्पादक : शंकरलाल सबनानी

## सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना को आपके पते के ऊपर **LAST COPY** लिखकर उसे **BOLD** करके दर्शाया गया है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए.

- व्यवस्थापक

किसी कारणवश वितरण न होने पर निम्न पते पर वापस करें-

सम्पादक, प्रेम प्रकाश सन्देश  
प्रेम प्रकाश आश्रम,  
गाढवे की गोठ, लश्कर,  
ग्वालियर 474001 ( म.प्र. )